आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 17 | उदयपुर शनिवार 15 सितम्बर 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

बचपन में आजादी की लड़ाई

- सुधारानी श्रीवास्तव -

मेरे वन्देमातरम् गान से नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का भाषण आरम्भ हुआ। मैं शुभ्र-ज्योत्सनाम् पर अटकी कारण कि सामने के दांत टूटे हुए थे। नेताजी ने पीछे से पीठ थपथपाई और मैं सम्हल गई। मैंने 1939 से 1944 तक स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। प्रभात फेरियों में किसी बड़े कार्यकर्त्ता के कन्धों पर चढ़ कर आजादी के गीत गाती। नेताजी बीमार थे अत: रथ पर नहीं बैठे। गांधीजी की फोटो रख दी थी। हम लोग नेताजी को देखने गये। नेताजी ने मुझे पहचान लिया। बोले- 'वन्दे मातरम् वाली हो न!' मैंने शरमा कर सिर झुका लिया। तब क्या पता था कि यह मासूम घटना अनमोल इतिहास बन जायेगी। सन् 1942 का आंदोलन। लड़कियों को खेल के पीरियड में इकट्ठा कर भाषण दिया जाता था- 'अंग्रेजी नहीं पढ़ना है। यह अंग्रेजों की गुलाम बनाती है।' हिन्दी के प्रति आदर भाव तभी से मेरे मन में समाया है।

बाबूजी ब्रिटिश सरकार के मुलाजिम थे तब आजादी की बात तक करना षड़यन्त्र समझा जाता था। अम्मा इलाहाबाद की थी। नाना का बंगला आनन्द भवन के ठीक सामने था। नाना ने सन् 1903 में बी. ए. पास किया। एक मामा श्रीराम श्रीवास्तव कृष्णा हठीसिंह के साथ पढ़े थे। दादी बिहार की थी। उनका जन्म 1855 में हुआ। वे हमें 1857 के गदर के किस्से सुनाती थीं।

आजादी की लड़ाई के इतिहास का परिचय दादी के किस्सों से प्राप्त हुआ। सन् 1939 में जब मैं प्रायमरी स्कूल में पढ़ती थी, गांधीजी के चरखे का प्रभाव व्याप्त था। बड़े बच्चे चरखा कातते और छोटी तकली से सूत निकालते थे। तकली 4-5 इन्च का मोटा तार होता था। इसके एक छोर धागा लपेटने की छोटी गोल तश्तरी सी होती थी। तार के दूसरी ओर हुक के समान धागा फंसाने की जगह थी। उससे तकली घुमाते रुई से तार निकालते थे। अब सब इतिहास हो गया। शायद किसी संग्रहालय में तकली रखी हो। हमने खूब सूत काता। तकली-चरखे से सूत कातते समय गाते थे-

'गांधी तू आज हिंद की इक शान बन गया
गांधी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया।'

सन् 1939 में जबलपुर के पास त्रिपुरी गांव में कांग्रेस का महा अधिवेशन हुआ जिसमें 52 हाथियों का रथ निकला। रथ पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को बैठना था। अधिवेशन के पूर्व नेताजी मण्डला आये थे। अम्मा की उनसे खूब घुटती थी। अंग्रेजी शासन को समाप्त कर स्वराज की बात होती। नेताजी की सभा में मामा मुझे भी ले गये। मैंने अम्ब्रेला कट की नीली चैक की नई फ्रॉक पहनी थी। अम्मा ने हमें 'वन्देमातरम्' सिखा दिया था। एक तख्त पर 3-4 कुर्सियां थी। माइक व बिजली थी ही नहीं। मेरे वन्देमातरम् गान से नेताजी का भाषण आरम्भ हुआ। मैं शुभ्र-ज्योत्सनाम् पर अटकी कारण कि सामने के दांत टूटे हुए थे। नेताजी ने पीछे से पीठ थपथपाई और मैं सम्हल गई। हम लोग अधिवेशन देखने जबलपुर आये। दादी 84-85 की रही होगी हमारे साथ थी। मैंने 1939 से 1944 तक स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। एक छोटे गांव भुआ-बिछिया में मैं आदिवासियों के स्कूल में चौथी क्लास में थी। सन् 1941 की बात है, अम्मा से भाषण लिखवा कर पेड़ के नीचे सभा में पढ़ा। अम्मा से खादी की फ्रॉक सिलवा कर सभा में भाषण देने जाती थी। प्रभात फेरियों में किसी बड़े कार्यकर्त्ता के कन्धों पर चढ़ कर आजादी के गीत गाती-

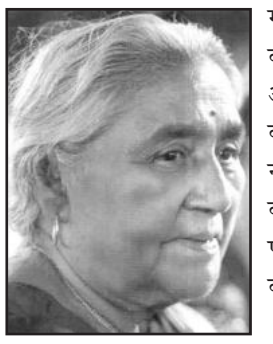

जोर-शोर से बढ़ते जाओ
गाओ खुशी के गान,
वीरों मेरे कदम बढ़ाओ
मात्र भूमि की शान बढ़ाओ
तज कर तुम अभिमान। वीरों मेरे...।

होली पर दादी होली की अग्नि में उरद के दाने दुश्मनों का नाम लेकर फेंकती तो हम गिन-गिन कर अंग्रेजों के नाम लेते जो उस समय चलन में थे। अब मात्र एलफांजो का ही नाम याद है। उरद के दाने होली में डाल कर स्वाहा बोलते। हमारी गतिविधियों की सूचना ब्रिटिश सरकार को लगी, तो बाबूजी के पास वार्निंग आई- अपनी बेटी को कांग्रेस का काम करने से रोको वरना तुम्हारी नौकरी जा सकती है। मैंने बाबूजी से कहा- नौकरी छोड़ दो, भूखे रह लेंगे पर भारत को अंग्रेजों से आजाद करायेंगे।

सन् 1939 के कांग्रेस अधिवेशन में हम लोग जबलपुर गये। 52 हाथियों का रथ देखने का क्रेज था। सड़क के किनारे बांस के टट्टों का शेड बना था। हम अपना राशन लेकर गये थे। वहां पत्थर का कोयला पड़ा था। अम्मा ने तीन बड़े कोयलों के ढेलों का चूल्हा बनाया। यह चूल्हा तीन दिन तक जलता रहा। चाय-खिचड़ी सब बनती थी। दूध के लिए कन्डेंस्ड मिल्क के डिब्बे थे।

हम लोग सड़क के किनारे दरी बिछा कर बैठे। हमारे यहां कैमरा जन्म के समय से है। भैया ने हाथियों के फोटो लिये। एक हाथी लीद कर रहा था। भैया ने उसकी पीछे से फोटो ली। कुछ लीद निकल रही थी। कुछ हवा में लटकी थी और कुछ जमीन पर पड़ी थी।

नेताजी बीमार थे अत: रथ पर नहीं बैठे। गांधीजी की फोटो रख दी थी। हम लोग नेताजी को देखने गये। नेताजी ने मुझे पहचान लिया। बोले- 'वन्दे मातरम् वाली हो न!' मैंने शरमा कर सिर झुका लिया। तब क्या पता था कि यह मासूम घटना अनमोल इतिहास बन जायेगी।

सन् 1942 का आंदोलन। मिडिल स्कूल में मैं सबसे नीचे पायदान पर थी। आजादी का नशा रग-रग में समाया था। वहां एक छोटा सा कुंआ था। वहीं एक ऊंचा चबूतरा था। लड़कियों को खेल के पीरियड में इकट्ठा कर भाषण दिया जाता था- 'अंग्रेजी नहीं पढ़ना है। यह अंग्रेजों की गुलाम बनाती है।' हिन्दी के प्रति आदर भाव तभी से मेरे मन में समाया है। कालान्तर में सेठ गोविन्ददासजी व ब्योहार राजेन्द्रसिंहजी के सान्निध्य में हिन्दी की लड़ाई शुरू की जो आज तक चल रही है।

वह असहयोग आंदोलन का समय था। डाक, तार व्यवस्था भंग करने की कोशिश की जा रही थी। मैंने एक लेटरबॉक्स उखाड़ने की कोशिश की। तब मैं मात्र 10 वर्ष की थी। लेटरबॉक्स टस से मस नहीं हो रहा था। तभी कुछ आंदोलनकारी आये व कहा- 'बेबी हटो- हम उखाड़ देते हैं।' आज यह सोच-सोच कर मन खुश हो रहा है कि कभी हम बुढ़िया भी ऐसी बेबी थी।

समाचार प्रेषण की हरकारा पद्धति

-डॉ. दीनदयाल ओझा-

घर, परिवार, उद्योग, व्यापार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की जानकारी एक-दूसरे को मिलती रहे, यह जानने की उत्सुकता अपने आत्मीय जनों में सदैव से रही है। आज की तरह पूर्व में ऐसे साधन नहीं थे। तब भी प्रजाजन और राज्य से जुड़े सन्देश हुकूमतों, भानों, ठाकुरों तथा बराबरी के राजाओं को भेजे ही जाते थे। इसके लिए सबसे प्राचीन पद्धति भावात्मक सन्देश प्रेषण की रही है।

तत्पश्चात संकेतात्मक या वाणी द्वारा सन्देश भेजने की प्रक्रिया शुरू हुई। उसके बाद पत्र-लेखन की प्रेषण प्रक्रिया आरम्भ हुई। पत्र ले जाने और लाने की पद्धति 'हरकारा' नाम से जानी गई। हरकारा राज्य द्वारा नियुक्त होता था जिसका एक स्थान से दूसरे स्थान तक डाक, पत्र, राज्यादेश लाने-ले जाने का कार्य होता था। उसके पास राज्यादेश स्वरूप बेल्ट, पट्टा प्रतीक रूप में होता जिसके कारण उसे कोई रोक-टोक नहीं सकता था। उसके हाथ में एक छड़ी या दण्ड होता था जिसके सिरे पर आठ-दस घुंघरू बन्धे होते थे। उनकी आवाज सुन लोग पहचान जाते कि हरकारा डाक लेकर आ रहा है अथवा जा रहा है।

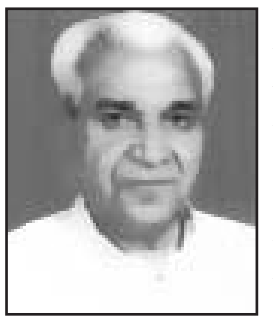

एक हरकारा सुनिश्चित दूरी के गांव तक जाता और आगे के समाचार-संवाद दूसरे हरकारे को सम्भला देता। इसी क्रम से हरकारे बदल-बदल कर गांव-गांव हुकूमत-हुकूमत, नगर-नगर चलते और पत्रों तथा राज्यादेशों को पहुंचाते। उस काल में हरकारे की बड़ी अहमियत होती थी। भीड़भाड़ के रास्ते, मेलों के यात्री, बारात आदि के मध्य उसे प्राथमिकता के आधार पर रास्ता मिलता। अपने निर्धारित गांव तक पहुंचता तो कोटड़ी में बड़ा आदर होता। वह लक्षित गांव के पत्र या आदेश अलग रखता और आगे के गांव के कागजात अलग थैली में।

कहते हैं कि हरकारों की विशिष्ट पोशाक याकि वर्दी होती जिससे लोग उसे पहचान लेते। हरकारा शारीरिक रूप से बलिष्ट, ज्ञान की दृष्टि से प्रत्युत्पन्न मतिवाला, हिंसक जीवों का सामना करने में सक्ष्म, चतुर-वाक्पट्टू, व्यवहार कुशल होता था। वह विभिन्न गांवों के रास्तों का जानकार और आकाश के तारों द्वारा समय और दिशाओं का ज्ञान रखने वाला होता था।

हरकारों की नियुक्ति प्राय: परम्परागत रूप से होती थी। अधिकांश रूप से हरकारे का बेटा ही हरकारा होता था क्योंकि वह गुण उसे विरासत में मिला होता था। हर हरकारा पीने का पानी और कुछ भोजन सामग्री साथ रखता था। गांव-गांव में हरकारों का पर्याप्त रूप से आदर होता था क्योंकि वही समस्त समाचारों का आधार होता था।

चतुर हरकारे अपने लक्ष्य के बीच नवोढ़ाओं के सन्देश भी उनके पीहर-सुसराल तक पहुंचा देते। जो रास्ते रेतीले, पहाड़ी, तालर, मैदानी होते और सन्देश-समाचार तुरन्त पहुंचाने होते तो उन्हें अच्छा द्रुतगामी ऊंट अथवा घोड़ा सुलभ हो जाता। अत: हरकारा ऊंट-सवारी और घुड़-सवारी में भी कुशल होता।

ज्यों-ज्यों आवागमन और दूरसंचार के साधनों का विकास हुआ, हरकारों की संख्या कम होती गई। आज तो हरकारा पद्धति इतिहास की घटना या स्मृति बनकर रह गई है। वस्तुत: हरकारे अपने समय के आदर्श पुरुष होते थे जो आम आवाम को देवदूत से प्रिय प्रतीत होते थे। आज भी जब मैं उस युग में प्रवेश कर हरकारे का व्यक्तित्व और कृतित्व स्मरण करता हूं तो लगता है चरण वन्दन कर उससे शुभ-मांगलिक सन्देश प्राप्त करूं।

कांकन की गांठें

- डॉ. मालती शर्मा -

पूरे भारत में सेहरा या मौर में लगी कलगी, गुजराती पटके में लटकती कटार और हाथ में बंधा कांकन या कंकन विवाह की अनिवार्य वस्तुएं हैं। यों तो हर भारतीय प्रदेश में कांकन के अपने-अपने नाम और रूप हैं। उनमें बंधी वस्तुओं के तांत्रिक, मांत्रिक तथा दाम्पत्य जीवन के सहयोगी अर्थ भी हैं जिसका ज्ञान कहीं है, कहीं नहीं भी है पर आज भी वर-वधू के हाथ में बिना कांकन बांधे विवाह नहीं होते और बिना कांकन की गांठें खोले कहीं भी सुहागरात नहीं हो सकती।

महाराष्ट्र का कांकन शायद सबसे सादा है। यहां पुरोहित वर-वधू को आमने-सामने बिठाकर दोनों को सूत से लपेटता है, बांधता है। सात तार होने पर उन धागों को मोड़ कर बीच में एक हल्दी की गांठ बांधकर कांकन बना वर की दाहिनी और वधू की बांयी कलाई में बांध देता है।

उत्तर भारत, राजस्थान और गुजरात में कांकनों के प्राचीन रूप में आज जैसी सजावट की कोई चीज नहीं होती थी। कलावे या मौली में एक लाख का, एक लोहे का छल्ला, एक कौड़ी, एक लाल कपड़े या पुराने कम्बल के टुकड़े की पोटली में नीम की पत्ती, कुए के पास की कंकड़ी और जरा सी चोकर ले पोटली और सारी वस्तुएं कलावे में पिरो ली जाती हैं। गांवों में ये कांकन गडरनी बनाकर लाती थी। कांकन तीन होते थे। उनमें से एक कलश के, दूसरा पोटली के और तीसरा वर या वधू की कलाई में बांधा जाता था। वर-वधू के तेल-हल्दी चढ़ने के बाद पांच-सात सुहागिनें मिल कलाई में बांधती थी। हर सुहागिन एक-एक गांठ लगाती थी। ये गांठें आसानी से न खुल सकें इसलिए गांठों में पिसी हुई उर्द की दाल भर दी जाती थी। उबटन लपेट दिया जाता था।

पर आज ये प्राचीन कांकन अपवाद रूप ही रह गये हैं। अब तो बाजार में गुजरात और राजस्थान के बने मोती, मूंगा, रेशम, जरी से बने तरह-तरह के सुन्दर कांकनों की बहार है। कांकनों के इस बाजार में दिल्ली, आगरा भी उतर पड़े हैं। लड़के या लड़की के विवाह में महिलाएं वर-वधू के साथ बड़े चाव से ये सुन्दर आकर्षक कांकन बांधती हैं। कुमारियां बांधकर कल्पनाओं के रंगीले स्वप्न संजोती हैं। कितना अच्छा होता अगर उन्हें पता होता कि श्रृंगार भरा प्रियतम का प्यार उनके कंगनों में झंकार क्यों भरता है? आंधी-बरसात की रातों में खनक कर उनका कंगना साजन के आंगन में आने का संकेत कैसे देता है?

आजकल विवाह में कांकन बांधना एक फैशन जरूर बन गया है पर हास-परिहास ठिठोलियों भरी कांकन खोलने की लोकाचारिक रीति, एक खेल हर व्यक्ति की विवाह की यादों में जीवन भर रहने वाली प्यारी मीठी यादें हैं। भले ही उन गांठों के खोलने के दाम्पत्य जीवन में विशेष अर्थ और प्रयोजन उन्हें मालूम न हों। कांकन में बांधी गई वस्तुओं के प्रतीकार्थों से वे अपरिचित हों।

दूल्हा-दुल्हन के लिए हाथों में बंधे इस कांकन की गांठें खोलना बड़ा दुर्वह कार्य है। कांकन की गांठें खोलना राम और कृष्ण तक को भारी पड़ गया था। जनकपुर की स्त्रियों ने माता-पिता तक को लेकर फब्तियां कसी थीं सुभद्रा बहन को बुलाने को कृष्ण से कहा था। राम को सीधे-सीधे चुनौती दी थी-

जे न होबै धनुष को टोरबो
कठिन कांकन गांठ छोरबो
मोहीं जनकपुरी की नारी
बे तौ सारी लगे तुम्हारी
इतै परिहै लाली सों
चित जोरबो, कठिन कांकन

राम लला कोई धनुष का तोड़ना नहीं है। वह तो सरल काम था। यह उससे भी कठिन कार्य है। सीता की कलाई में बंधे कांकन की गांठें खोलना। तुमने अपनी मोहिनी, अपने आकर्षण से जनकपुर की स्त्रियों को मोहित कर लिया। वे तो तुम्हारी सालियां लगती हैं पर यहां तुम्हें मन की सारी गांठें खुलवाकर सीता लली से मन मिलाना पड़ेगा। जहां कहीं भी तुम्हारा मन बंधा है, उस बंधन की गांठें खुलवानी पड़ेंगी।

कांकन खोलने को कृष्ण से तो सीधे-सीधे कहा गया है कि कांकन में कठिन गांठें लगी हैं। तुम दो बापों वाले हो। अपनी मां यशोदा और सुभद्रा बहन को बुलालो-

क्या कारन कीन्ही देर स्याम कांकन खोलो
स्याम कांकन खोलो नंदलाल कांकन खोलो
कांकन गांढ़ि दुहेली लागी एक माय द्वै बाप
अपनी माय जसोदा से बोलो
अपनी भैन सुभद्रा से बोलो, क्या कारन.....

कांकन खोलने का लोकाचार ब्रज में ककनांवरि कहा गया है। विवाह के बाद कहीं-कहीं वर-वधू के घर और कहीं बारात लौटने पर वर के यहां होता है। यह रीति भाभी, चाची, मामी भी करा सकती है। दूल्हे के कांकन को दुल्हन खोलती है। दुल्हन के कांकन को दूल्हा खोलता है। इस समय गांठों के न खुलने पर हंसी उड़ाने वाली और उत्साहित करने वाली बहन, भाभी, मामी, चाची, सखियों की दो टोलियां बन जाती हैं। वधू की मां को भी ताना सुनना पड़ता है। कांकन की ये गांठें एक ही हाथ से खालनी होती हैं। अब इस बंधन में भी ढिलाई घुस आई है।

अपनी मइयाऐ च्यों नौंय लाई छिनरी की
कांकना नाँय खूटै

कांकन खुलने पर वधू के कांकन को वर के पैर के नीचे और वर के कांकन को वधू के सिर पर रख देते हैं। फिर एक कढ़ाई भरके पानी लिया जाता है। वर की भाभी अपने हाथों में थोड़ी सी दूब, एक रूपया, एक अंगूठी और दोनों कांकन लेती है। इन सबको अपनी चतुरता के साथ कढ़ाई के चारों ओर घुमाती है। छोड़ने का दिखावा करती है पर छोड़ती नहीं और कभी अचानक छोड़ देती है। वर-वधू दोनों पानी में से रूपया और अंगूठी जीतने का प्रयास करते हैं। सामग्री सात बार पानी में डाली जाती है। वर के जीतने पर तालियां बजती हैं। पहली और आखिरी बार वर का अंगूठी जीत लेना शुभ माना जाता है।

कांकन बांधने और खोलने का यह लोकाचार ऊपर से देखने में छेड़छाड़ और हास-परिहास का अपनी तरह के मनोरंजन का लगता है पर कांकन बांधना, उसमें गांठें लगाना और फिर वर-वधू का एक-दूसरे की गांठें एक हाथ से ही खोलना यह पूरी प्रक्रिया बहुत कुछ कहती है। वैवाहिक जीवन में सुख, सौमनस्य और प्रेम के स्थायित्व के मंत्र देती है।

कविवर रहीम ने कहा है- 'जहां गांठ तँह रस नहीं।' नव दम्पत्ती में प्रेम के लिए गांठें खोलना तो ठीक है पर ये गांठें लगाई क्यों जाती हैं?

वस्तुत: कांकन में गांठें लगाने-खोलने में साम्यमूलक टोना है। कांकन में गांठें वर-वधू की अपने-अपने मन की और दाम्पत्य जीवन में आगे भी पड़ती और किन्हीं और हाथों द्वारा दोनों के बीच में लगाई जाती गांठें खोलने की शक्ति की क्षमता, चतुरता की पूर्व परीक्षा है। क्षमता जगाने का टोना है।

वर-वधू का एक-दूसरे के कांकन की गांठें एक ही हाथ से खोलने का तात्पर्य है अपने मन के प्रेमबंधन जो भी कहीं रहे हैं उन्हें बिना लाग लपेट के, एकनिष्ठता से खुलवा डालना यानि मन के भेद एक-दूसरे के सामने रखकर बिना गांठों का मुक्त मन हो जाना है ताकि दाम्पत्य जीवन के प्रवाह में बिना गांठों के प्रेम रस बिना अटके बहता रहे। दाम्पत्य जीवन खंडित न हो।

वर-वधू की कलाइयों में बंधे इस कांकन की वस्तुओं का गृहस्थ जीवन के लिए अलग-अलग संदेश है। लोहे का छल्ला गृहस्थ जीवन के सारे आंधी, तूफान, विपत्तियों में लोहे जैसी फौलादी दृढ़ता रखने का प्रतीक है। कांकन का डोरा (सूत) पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन में चरित्र की शुद्धता और अखंडित प्रेम का प्रतीक है। लाख का छल्ला लाखों की सम्पन्नता देने वाली शुभकामनाओं का अर्थ लिये है। नीम, केकड़ और चोकर जो पोटली में बंधे होते हैं, पोटली गृहस्थ जीवन में आते कड़वे प्रसंग, कठिनाइयां और तंगहाली की प्रतीक है। कांकन में बंधी कौड़ी गृहस्थ धर्म से डिगने पर सामाजिक अनादर की द्योतक है। दम्पत्ती को यह याद दिलाने को है कि यदि तुमने जीवन में अनुचित कार्य किये तो समाज में तुम्हारी इज्जत दो कौड़ी की रह जायेगी।

कांकन में कौड़ी डालने का शायद एक और भी अर्थ वर-वधू को समझा देने का है कि विवाह जिंदगी का जुआं है जिसे तुम्हें खेलना है पर इसे हार के भय से मत खेलो। यही समझ महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा था कि विवाह करो या न करो, तुम्हें दोनों हालत में पछताना होगा।

जैन संत अम्बा गुरु की मांगलिक का प्रभाव

मेवाड़ प्रवर्तक जैन संत श्री अम्बालालजी बड़े प्रभावक संत हुए हैं। उनकी प्रभावना श्रेष्ठ संत के रूप में जन-जन की कंठहार बनी हुई है किन्तु कई रहस्यमय कथा-घटना-प्रसंग भी सुनने को मिलते हैं।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के जानेमाने सूत्रधार प्रकाश नागौरी ने उनसे सम्बद्ध तीन घटनाओं का आंखों देखा अनुभवजनित हाल सुनाया जो महाराजश्री के सिद्ध-साधक रूप को दर्शाता है।

नागौरी तीनों ही घटनाओं की जनसभाओं के संयोजन-साक्षी रहे। चातुर्मास काल की पहली घटना चित्तौड़गढ़ के मीरांनगर में प्रवेश-समय की है। विशाल जनमेदिनी के उमड़ाव के बीच मुनिश्री ने प्रकाशजी को संयोजन से पूर्व हिदायत देते फरमाया कि ठीक ग्यारह बजकर 29 मिनट पर वे उपस्थित श्रावकों को मांगलिक देंगे। यह मांगलिक दो मिनट की होगी और ठीक ग्यारह बजकर 31 मिनट पर वे सभा-स्थल छोड़ देंगे। सबको सूचित कर देना कि मांगलिक के तुरन्त बाद सब पाण्डाल छोड़ दें।

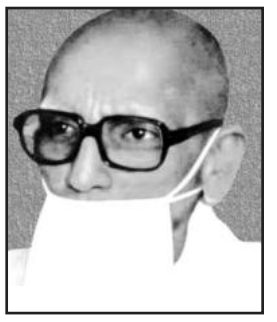

यही हुआ। जब सभास्थल पर एक भी व्यक्ति नहीं बचा तब जोर की बरसात हुई। वर्षा की ऐसी जड़ी लगी कि लगातार पांच घंटे में सर्वत्र पानी ही पानी हो गया और पाण्डाल बुरी तरह ध्वस्त हो गया। नागौरी ने बताया कि उस दिन बरसात होने के आसार नहीं थे। लोग स्वयं यह करिश्मा देख चकित होते किसी रहस्यमय चमत्कारिक घटना का कयास लगाते रहे।

दूसरी घटना भीलवाड़ा जिले के भींटा गांव की है। उस दिन गुरुदेव की जन्म जयंती थी। गुरुदेव जब मांगलिक फरमा रहे थे तब अचानक शामियाना दो-ढाई फीट ऊपर उठा। केसर की बरसात हुई और मांगलिक की समाप्ति के साथ-साथ पुन: शामियाना पहले की स्थिति में आ गया। लोग इसे गुरुदेव का करिश्मा समझ 'गुरुदेव की जय' तथा 'अम्बा गुरु अमर रहें' के बड़ी देर तक जोर-शोर से नारे लगाते रहे।

तीसरी घटना थामला की है। उस दिन भी गुरुदेव का जन्म जयंती महोत्सव था। प्रकाशजी को धर्मसभा के संयोजन का बुलावा था। वे आश्वस्त थे कि पिछले जयंती समारोह की तरह इस बार भी कोई न कोई चमत्कारिक घटना घटने वाली है। अत: उन्होंने अपने परिवार वालों को भी साथ ले लिया। सभी श्वेत परिधान में वहां पहुंचे और मांगलिक के समय ठीक उसी तरह की घटना घटित हुई जैसी भींटा में देखी गई थी।

उदयपुर में वर्षों से गुरुदेव के नाम से संचालित अम्बागुरु शोध संस्थान के व्यवस्थापक एवं जैन धर्मज्योति के यशस्वी सम्पादक ओम समदर्शी ने बताया कि गुरुदेव अम्बालालजी महाराज सा. का पूरा जीवन ही अद्‌भुत सिद्धियों का खजाना रहा। उनके सम्बन्ध में अनेक ऐसी घटनाएं जन-जीवन में व्याप्त हैं जो महान संत श्रेष्ठ की साक्षी हैं। संवत् 2050 में गुरुदेव का परलोक गमन हुआ।

-डॉ. तुक्तक भानावत

खोज-खबर

सबरंग भजनों में खोये शंकरजी

उदयपुर की पानेरियों की मादड़ी नामक बस्ती में पिछले पचास वर्षों से शंकरलालजी पाणेरी (80) अपनी भजन मण्डली के साथ गणेशजी, शिवजी, रामजी, कृष्णजी और मीरांबाई के भजन गाने में बड़ा नाम किये हैं। काष्ठकला के पारम्परिक शिल्पी मांगीलाल मिस्त्री और उनकी कला संगिनी सायरदेवी के घर उनसे 13 मई 1998 को हुई मेरी भेंट बड़ी मूल्यवान रही।

इस भेंट के दौरान शंकरलालजी ने मुझे बताया कि उनकी भजन मण्डली में सात-आठ भजनीक हैं जो हर माह की आठम तथा ग्यारस-बारस को शौकिया भजनभाव करते हैं। बुलाने पर भी उनकी मण्डली जाती है। मुझे अच्छा यह भी लगा कि वे बातचीत के बीच भजनों की झड़ी लगा देते हैं। शेष दुनियादारी से उनका कोई खास लगाव नहीं है। उसी बस्ती में ज्ञानमाता चुन्नीबाई निवास करती हैं जिनका पूरा जीवन ही भजनभाव तथा व्रतकथा-कथन में साधनामूलक समर्पण लिये है। उन्हीं की प्रेरणा तथा प्रभु-भक्ति से शंकरजी और उनके साथी सोहनजी भजनीक बने संतोषी हैं। सर्वप्रथम उन्होंने अपनी पसंद का यह भजन कहा-

कद की जोवे वाट हो नंदजी रा लाल
एजी आवण-जावण कर गया थीं
कर गया कौल अनेक।
एजी गिणतां-गिणतां घिस गई
म्हारी आंगलियां री रेख।। नंदजी रा .....
हाय आंगलियां री रेख गिणती म्हैं फिरूं
पण खड़ी मंदिर के बारणे ऊबी जोऊं वाट। नंदजी रा .....
एजी तन चोखा, मन लापसी, नैनां घी की धार
दोन्यू हाथ परोसती जी म्हारा जियो कृष्णमुरार
एजी जियो कृष्णमुरार हाजर म्हैं खड़ी। नंदजी रा .....
भोजन बणाऊं थारे पातळ्या रे कांई हीरा तो मूंगां री दाल
लपसी बणाऊं थारे सोलमीजी कांई माहें डाड़मियां री दाख
माहें डाड़मियां री दाख के मोहन आवजो। नंदजी रा .....
गाय दुवाडूं थारे छालरी जी कांई दूधड़ा धोवाऊं थांरे पांव
एजी भैंस दुवाडूं थारे बाखड़ीजी गूंदली रंदाऊंड़ी खीर। नंदजी रा...
बाई मीरां री विनती एजी सुणजो कृष्ण मुरार।
हाथ जोड़ अरजी करूं लीजो कंठ लगाय।
लीजो कंठ लगाय के आसी आपरी
पण जनम-जनम री दासी वाजूं आपरी।

मेवाड़ी बोली के इस भजन में मीरांबाई कृष्ण को जीमने के लिए आमंत्रित कर प्रतीक्षारत है। कह रही है- आने का कह गये। अनेक वादा कर गये। प्रतीक्षा की घड़ियां गिनते-गिनते मेरी ऊंगलियों की रेखाएं घिसने लग गई हैं। आपकी प्रतीक्षा में मंदिर के बाहर अपने तन को चावल, मन को लपसी तथा नैनों को घी की धार दिये खड़ी हूं। परोसकारी के लिए मेरे दोनों हाथ प्रतीक्षारत हैं।

सर्वस्व-समर्पण का प्रतीक भाव देखिये। मेवाड़ी जीमण में चावल, लपसी का घनिष्ट मेल है। इस मेल में घी की धार स्वाद को चटखारा बना देती है। लपसी भी सोलमी अर्थात् एक मण में सौलह सेर घी वाली जिससे उसका कण-कण दाड़िम के दाने जैसा छिटक जाय। पुराने तोल में एक मण में चालीस सेर होते थे और बारह मण का एक माणी वजन होता। पतले-पतले फूल जैसे फुलके, उनके साथ बड़े-बड़े हरे मूंग की दाल।

हे नंदजी के लाल ! आप पधारें। छालरी गाय के दूध से आपके पांव प्रक्षालन करूंगी और बाखड़ी भैंस के दूध से गुदली खीर बनाऊंगी। छालरी गाय लीली गाय होती है जो सफेद तथा नीले रंग का मिश्रण लिए होती है। बाखड़ी भैंस का दूध गाढ़ा होता है। ऐसी भैंस जिसका बच्चा, पाड़ा-पाड़ी मृत्यु प्राप्त होने पर छह माह बाद एक समय दूध देती हो, उस दूध में खीर बनाने पर उसमें वासुंदी अर्थात् रबड़ी जैसे लच्छे बन जाते हैं।

दूसरे भजन में मीरांबाई राधा-रूप में मोहन को अपने गांव आने का हेला दे रही है-

मोवन आजो-आजो रे म्हारे गामड़े। हां हां रे मोवन....
गोकुल म्हारो सासरो जी कांई मथुरा म्हारो पीर
बरज भान री कंवर लाडली राधा म्हारो नाम। हां हां रे मोवन..
नानणिया रो म्हारे घाघरो जी कांई अंगीया बूंटीदार
सालू सांगानेर को जी कांई नथड़ी झलकादार। हां हां रे मोवन..
जमना तू जग तारणी जी कांई निरमल थारो नीर
पणहार्यां पाणी भरे जी कांई ओढ़े दखणी चीर। हां हां रे मोवन..
बाई मीरां री विनती सुणजो सरजणहार
सरणे आया लज्जा राखजो चारभजानाथ। हां हां रे मोवन..

यह भजन भी पूरी मेवाड़ी संस्कृति तथा उसकी जीवनधर्मिता को दिग्दर्शित करता है। इसमें मीरां के बहाने राधा कृष्ण को अपना परिचय देती बुला रही है किन्तु उसका पैरण अर्थात् पहनावा पूर्णत: मेवाड़ी छाप का है। उसने नानणिया एक प्रकार की छोटी-छोटी बुंदकियों की छपाई वाला घाघरा, बारीक बूंटी वाली कांचली पहन रखी है। सांगानेरी छपाई का उसने ओढ़ना ओढ़ रखा है। पानी भरने वाली पनिहारिनों ने भी मक्खी जैसी शक्ल वाली छाप दखनी चीर ओढ़ रखा है। उस छोटे से गांव में सबका पहनावा एक जैसा नन्ही-छोटी बूंटकियों वाला है।

तीसरा भजन भी मीरां की छाप का है। इस भजन में मीरां राणाजी से रूठी हुई है। यह राणा मीरां का पति भोजराज नहीं है। भोजराज यद्यपि सांगा के पाटवी पुत्र थे किन्तु उन्होंने कभी राजगद्दी स्वीकार नहीं की। वे पक्के शिव-भक्त थे। उन्होंने तो तलवार तक नहीं छुई। अपना सारा समय वे शिव-भक्ति में ही देते रहे। उनका छोटा भाई रतनसिंह तब राणा बना किन्तु उसका व्यवहार न भोज और न मीरां ; दोनों के प्रति विषम ही बना रहा इसलिए भोजराज की मृत्यु के बाद मीरां ने भी चित्तौड़गढ़ त्याग दिया। फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस भजन में राणा रतनसिंह के प्रति मीरां का दर्द, उसकी नाराजगी और अप्रिय व्यवहार का संकेत भी मिलता है। मीरां स्पष्ट कहती है कि राणाजी सुन लो! अपने राज्य में आना तो दूर, कभी यहां का पानी तक नहीं पीऊंगी। कृष्ण गोकुल के ठाकुर थे इसलिए मेवाड़ में ठाकुरजी के मंदिर मिलते हैं। राजा तो द्वारका के थे सो द्वारकाधीश कहलाये।

ऊंचा राणा थारा गोखड़ा रे नीचे मीरां री परसाल
पगल्या जी बांधै मीरां घूघरा रे हाथ वजावै मीरां ताल
बाई मीरां जलमी मेड़ता राणा गड़ चित्तौड़
राणा रूठै तो राज राखै म्हैं राख्यो गड़बोर। मीरां...
बाई मीरां उतरी म्हैल सूं राणाजी पकड़्यो हाथ
हाथ राणाजी म्हारो छोड़ दे म्हूं जाऊंली सांवरिया री लार। मीरां...
बाई मीरां री विनती सुण राणाजी म्हारी वात
राणा अणी थारा राजमां पाणी न पिऊंला आय। मीरां..

परसाल से तात्पर्य चौपाल अथवा बरामदे से है। मकान के आगे ढलियेनुमा बरामदे को पट्याल भी कहते हैं। मेवाड़ के चारभुजा में जिसे गड़बोर कहते हैं, कृष्ण मंदिर की बड़ी धाम है। भजन में गाया जाता है- 'गड़बोर बिराजे चारभजा।'

शंकरलालजी ने बताया कि वे पेटी अर्थात् हारमोनियम के साथ भजन गाते हैं। उनके साथ सोहनजी पाणेरी रहते हैं जिनसे मजमा जमता है और रंगत खुलती है। सोहनजी भजन-दल के अगुवा हैं। उन्हें अनेक भजन कंठस्थ हैं। वे गाना शुरू करते हैं तो आखी रात रतजगा कर देते हैं। गाते समय कहीं खो जाते हैं। शंकरजी भी उनके साथ कड़ावे से कड़ावा मिलाकर गाने में रुल जाते हैं।

शंकरजी को मैं गोताखोर की तरह भजन रचने की बातों में ले जाता हूं। पहले तो वे कुछ भी बताने में हिचकते हैं पर बाद में अपने को खोलते हुए कहते हैं, हर समय हमारा भजन नया होता है। कुछेक बोलों की आवृत्ति के बाद पता ही नहीं चलता, दूध दूहते वक्त जैसे धार अपनेआप चलती रहती है वैसे ही भजनों की धार बरसात की तरह बरसने लगती है। लगता है जिसका भजन गाते हैं वो ही दिव्यात्मा हमारे शरीर में प्रवेश कर ग्यान और ध्यान देती रहती है। गाते वक्त हम बेहाल, बेसुध हो जाते हैं।

रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल बनाम जवान बाग

उदयपुर का सुखाड़िया सर्कल शहर का सबसे अव्वल बेहतरीन सर्कल है जो पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया के नाम से है। इसी के पास रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल है। इससे पूर्व यह स्थल शीशोदा की बाड़ी नाम से जाना जाता था। नाथद्वारा के पास का शीशोदा गांव सामन्तीकाल में आढ़ा गोत्र के ठाकुर घराने को महाराणा ने बख्शीश दिया था।

इस घराने में किशना आढ़ा बड़े प्रसिद्ध कवि हुए। महाराणा भीमसिंह के पुत्र महाराजकुमार जवानसिंह ने इनसे काव्य-रचना करने की विधिवत शिक्षा लेकर अनेक कवित्त, सवैये, दोहे, छप्पय और पद लिखे। वे कविता में अपना नाम 'ब्रजराज' लिखते थे। इनमें 296 पदों के एक संग्रह का सम्पादन मैंने 'ब्रजराज काव्य माधुरी' नाम से किया। कविता में महाराणा 'ब्रजराज' उपनाम लिखते थे। इसके प्रकाशन का समस्त व्यय महाराणा श्री भगवतसिंहजी ने वहन किया जो साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर से सन् 1966 में छपा। संस्थान में तब डॉ. मोतीलाल मेनारिया निदेशक थे। उन्हीं की पहल पर महाराणा ने प्रकाशन सहायता दी।

शीशोदा के ठाकुर लक्ष्मणसिंह आढ़ा ने मुझे बताया कि महाराजकुमार जवानसिंहजी ने किशना आढ़ा को संवत् 1822 के आसोज माह में बारह बीघा जवान बाग के नाम से भूमि बख्शीश की। यही बाग आगे जाकर शीशोदा की बाड़ी नाम से मशहूर हुआ। बाद में यह भूमि (बाग) सरकार द्वारा गृहीत कर यहां रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल बनाया गया। ठाकुर लक्ष्मणसिंह ने अपनी हवेली में 8 अक्टूबर 1963 को मुझे यह छप्पय सुनाया-

बारा बीघा बेस जमे त्रे साख निपज्जे।
नह चल दोय निवाण अणठल मधुर उपज्जे।।
अंब गोड़ छाबीस इख रंज अगेतो।
अठारासो बर्यारी साख आसोज सहेतो।।
कण कसन हूंत सुनजर करै वो रतणो सरसियो।
जवानै कंवर भीमेणरे बाग जवान बरसियो।।

इन्हीं ठाकुर लक्ष्मणसिंह के पुत्र कुंवर केसरीसिंह आढ़ा थे। वे भारतीय लोककला मण्डल में मेरे साथ खोज-विभाग में मेरे सहयोगी रहे और बाद में वहां के व्यवस्था मंत्री बने। **-म.भा.**

विश्व का सबसे बड़ा और छोटा नोट महेन्द्र शर्मा के कलेक्शन में

उदयपुर के महेन्द्र शर्मा के कलेक्शन में विश्व का सबसे बड़ा और सबसे छोटा नोट है। महेन्द्र शर्मा ने बताया कि विश्व का सबसे बड़ा नोट मलेशिया का 600 रिंगिट का नोट है जो मलेशिया के 60वें स्वतंत्रता दिवस पर वर्ष 2018 में जारी किया गया है। इसकी साइज 370 एमएम गुना 220 एमएम है। इस नोट को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने भी विश्व के सबसे बड़े नोट (लीगल टेंडर) का खिताब दिया है।

इसी प्रकार विश्व का सबसे छोटा नोट रूस में 1916 में जारी किया गया था। यह 10 रशिया कोपेक्स का नोट है। इसकी साइज 30 गुना 25 एमएम की है। इस नोट को तब के सोरिस्ट एंपायर की ओर से जारी किया गया था।

उदयपुर में मार्बल व्यवसायी महेंद्र शर्मा पिछले 30 वर्षों से न्यूमिस्मेटिक और एंटीक्स का कलेक्शन कर रहे हैं। शर्मा ने बताया कि उनके पास करेंसी और एंटीक्स में कई नायाब कलेक्शन हैं। एंटिक्स में सौ साल पुरानी हैंगिंग प्लेट्स हैं, ओल्ड क्रॉकरी, पुराने गैलेन्ट्री अवार्ड्स, मार्बल जार, ओल्ड केरोसिन लेम्प्स साहित कई 100 से 200 वर्ष पुराने दुर्लभ कलेक्शन हैं।

वर्ष 2017 में उन्होंने पेपर नोट करेंसी में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। उनके कलेक्शन में 175 देशों के नोट हैं। इनमें से कई ऐसे हैं जो अत्यंत दुर्लभ हैं। उनके पास फेंसी नोटों के साथ ही स्टार नोटों की सीरिज का भी कलेक्शन है। वे 30 वर्षों से नोट कलेक्शन कर रहे हैं।

उनके कलेक्शन में वर्ष 1917 से 2017 तक एक रूपये के जितने भी नोट भारत में निकले वे सभी हैं। इसके साथ 'एरर नोट' का भी विशाल कलेक्शन हैं। ये वे नोट हैं जिनमें पेपर और प्रिंटिंग की मिस्टेक है।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 सितम्बर 2018

सम्पादकीय

क्षमा वीरस्य भूषणम्

क्षमा को वीरों का आभूषण कहा गया है किन्तु अब वैसे वीर कहां जो अपने जरा से अपराध पर भी शुद्ध अन्त:करण से क्षमा की याचना करें। दानवीर, सेवावीर, कर्मवीर, युद्धवीर, सत्यवीर, क्षमावीर जैसे वीरवर पूर्वकाल में तो हुए हैं, वर्तमान काल में बमुश्किल ही ढूंढ़ने पर मिलेंगे। जैनियों में वर्ष में एक दिन क्षमा याचना का दिवस आता है। इसे संवत्सरी कहते हैं। जैनदर्शन के मान्य विद्वान डॉ. नरेन्द्र भानावत ने जिनवाणी पत्रिका के सितम्बर 1979 के अपने सम्पादकीय में लिखा-

ज्यों-ज्यों मशीनों पर तकनीकी का विकास होता जा रहा है, त्यों-त्यों मनुष्य मशीनों पर आश्रित होता जा रहा है। इससे शरीर को सुविधा मिली है और इन्द्रियों के विषय-सेवन के क्षेत्रों का विस्तार हुआ है। फलस्वरूप भोग वृत्ति बढ़ी है। भोगलिप्सा ने त्याग वृत्ति को आक्रान्त करना शुरू कर दिया है। इससे त्याग का जो प्रभाव और तेज प्रकट होना चाहिये, वह भी बाधित होने लगा है। मानवीय सद्वृत्तियां भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं रही हैं। सेवा, सहयोग, परोपकार, दया और क्षमा जैसे भाव भी अब यांत्रिक बनते जा रहे हैं।

क्षमा आत्मा का सहज स्वभाव, गुण और धर्म है। जब मन में किसी दूसरे के प्रति क्रोध उत्पन्न होता है, अपने से दूसरे को हीन देखने की वृत्ति जाग्रत होती है, अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कथनी-करनी में अन्तर करना पड़ता है, इच्छाओं व आवश्यकताओं की सीमा बढ़ती जाती है, तब आत्मा का क्षमा भाव खण्डित और बाधित होता है। इसे पुन: अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने एवं अपने स्थान में लाने के लिए मन को सरल, शान्त, विनम्र, संयममय और संतोषी बनाना पड़ता है। इसके लिए दूसरे के दोषों को देखने के स्थान पर अपने दोषों को देखने की वृत्ति विकसित करनी पड़ती है। अपने वर्तमान व्यवहारों के प्रति विवेकपूर्ण सतर्कता बरतनी पड़ती है।

संवत्सरी आने पर हम परस्पर क्षमा भाव का आदान-प्रदान करते हैं। अधिकांश लोग बिना किसी तैयारी के मात्र शिष्टाचार के नाते खमाते हैं। दूसरे शब्दों में क्षमा भाव से हार्दिकता गायब होती जा रही है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस हार्दिकता की रक्षा करें और क्षमा मांगने से पहले अपने भीतर गहरे उतरें। क्रोध के साथ अपने अहं को भी छोड़ें। शल्य रहित बनें और मन में अल्प इच्छा संतोष का भाव लाएं।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' अब ककहरा से इबारत बन चुका है। मैं विगत एक वर्ष से अधिक समय से नियमित शब्द रंजन का पाठक हूं। यह केवल रंजन ही नहीं करता, मेरी पढ़ास की क्षुधा को भी तृप्त करता है और कई अनजान जानकारियां भी देता हैं। महेन्द्रजी के संरक्षण में आप सम्पादकीय विधा में निष्णात हो रहे हैं जो स्तुत्य है। **-वैद्य ताराशंकर जोशी, भीलवाड़ा**

7 सितंम्बर 2018 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के प्रो. डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा शब्द रंजन कार्यालय में। लगभग दो घंटे के दरमियान उनसे साहित्य, उसके सरोकार, संरचना, जीवनमूल्य तथा कला एवं सांस्कृतिक दृष्टि से आ रही चुनौतियों पर बेबाक बातचीत हुई। इस अवसर पर डॉ. महेन्द्र भानावत के साथ डॉ. लक्ष्मीलाल बैरागी, डॉ. सरिता जैन एवं डॉ. तुक्तक भानावत ने विशिष्ट भागीदारी निभाई।

केंद्रीय अकादेमी का रूझान भाषा उन्नयन की बजाय लिपि उन्नयन में!

- भगवान अटलानी -

प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से 1954 में भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिये साहित्य अकादेमी की स्थापना की गई। संविधान में स्वीकृत भाषाओं के अतिरिक्त दो भाषाएं साहित्य अकादेमी के कार्यक्षेत्र में शामिल हैं। इन दो भाषाओं राजस्थानी व अंग्रेज़ी सहित कुल चौबीस भाषाओं की भाषाई सलाहकार समितियों के सदस्यों, उनके संयोजकों और अकादेमी अध्यक्ष व सचिव आदि को शामिल करके बनी कार्यकारिणी समिति के माध्यम से निर्णय लेकर समस्त गतिविधियों का संचालन किया जाता है। दिल्ली में मुख्यालय तथा मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई में अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय हैं। संबंधित क्षेत्र की भाषाओं का सारा कामकाज क्षेत्रीय कार्यालयों में होता है।

केन्द्र की साहित्य अकादेमी भाषा उन्नयन में नहीं, लिपि उन्नयन में रुचि ले रही है। जब राजस्थानी भाषा की आंचलिक विभिन्नताओं के बावजूद किसी भी क्षेत्र के डाइलेक्ट को पुरस्कारों में शामिल किया जा सकता है तो अन्य भारतीय भाषाओं की एकाधिक लिपियों को मान्यता क्यों नहीं दी जा सकती? भाषा और साहित्य के चौराहों पर खड़ा यह प्रश्न पुरज़ोर दस्तक दे रहा है।

अभिव्यक्ति के लिये प्रत्येक भाषा की एक या एक से अधिक लिपियां हैं। यहां अभिव्यक्ति से आशय मात्र लिखने और पढ़ने से है। बोलने के लिये भाषा के पास उपलब्ध शब्द सम्पदा पर्याप्त होती है। भाषाई आधार पर स्थापित प्रदेशों की भाषा व लिपि के सन्दर्भ में सामान्यत: विवाद नहीं है किन्तु कुछ भाषाएं ऐसी हैं जिन्हें एक लिपि के साथ संयुक्त करना संभव नहीं है। कोंकणी की पांच लिपियां हैं। पंजाबी की दो लिपियां हैं।

उर्दू व सिन्धी की भी दो लिपियां हैं। अपने प्रदेश वाली भाषा को पढ़ने व पल्लवित करने के लिये राजनीतिक व प्रशासनिक तन्त्र है। यह तन्त्र लिपि की चिन्ता भी करता है। मगर उर्दू और सिंधी भाषाओं के पास प्रदेश नहीं है। उर्दू भाषियों के बच्चों को तो फिर मदरसों के माध्यम से पर्शियन अरेबिक लिपि सीखने का अवसर मिल जाता है, सिंधी भाषियों को अरेबिक लिपि में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा लगभग नहीं मिल पाती है। देवनागरी प्रचलित लिपि है। हिन्दी भाषा का अध्ययन देवनागरी लिपि में प्रत्येक सिंधी भाषी विद्यार्थी करता है। इसलिये अरबी लिपि की तुलना में देवनागरी लिपि भारत के सिंधी भाषियों के लिये अधिक अपनी है।

साहित्य अकादेमी की नीति एक भाषा की एक लिपि स्वीकार करने की है। अकादेमी की दलील है कि एक भाषा की एक से अधिक लिपियां स्वीकार करने से संबंधित भाषा के विकास व उन्नयन की राह दुर्गम हो जायेगी। साहित्य सृजन, गुणवत्ता और निर्णय प्रक्रिया पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। भाषा में लिपि के समर्थक व विरोधियों के गुट बन जायेंगे। खेमे भाषा के संवर्द्धन के स्थान पर लिपि की बहबूदी के लिये प्रयत्नशील होंगे। एक भाषा-एक लिपि के कारण सृजनधर्मी एकांगीभाव से साहित्य की समृद्धि के लिये कार्य करेंगे।

अदालतों और सरकारी कार्यालयों में कार्य व्यवहार का माध्यम यही था। सामान्यत: महिलाएं सिंधी भाषा किन्तु गुरमुखी लिपि (जिसका मूलाधार देवनागरी लिपि है) में गीता, रामायण, सुखमनी आदि पढ़तीं थीं। पौरोहित्य कर्म और जन्मपत्रियां देवनागरी लिपि में सम्पादित होते थे। व्यापारी, खाता बहियां मात्रा विहीन हटवाणिकाई लिपि में लिखते थे। विभाजन के बाद इसी भाषा-लिपि विरासत को साथ लेकर भारत आये सिंधी समुदाय ने आरम्भ में शिक्षा, व्यापार आदि में उसी लिपि का प्रयोग किया जिसका वे सिंध में करते थे।

सिंधी की साहित्यिक विरासत अरबी लिपि में उपलब्ध है। मूलत: व्यापार केन्द्रित होने, अरबी लिपि का ज्ञान न होने और लिखने- पढ़ने की प्रवृत्ति में सार्वजनिक ढलान के कारण साहित्यिक खजाने की चॉबी दुर्लभ होती जा रही है। बुज़ुर्ग पीढ़ी के सिंधी के लेखकों व साहित्यकर्मियों की पृष्ठभूमि, शिक्षा-दीक्षा, प्रशिक्षण व मानसिकता सिंधी भाषा की अरबी लिपि के पक्ष में है। हिन्दी या देवनागरी लिपि में सिंधी साहित्य का सृजन उनके लिये कठिन है। जैसा कि सब भाषाओं में होता है, साहित्य में वर्चस्व अपेक्षाकृत अधिक आयु वाले लेखकों को मिलता है। सिंधी में यह स्थिति अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक है। ऐसे में अधिकांश लेखक सिंधी भाषा की अरबी-लिपि के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं।

साहित्य अकादेमी की सिंधी भाषा से संबंधित सभी समितियों में वयोवृद्ध साहित्यकारों का महत्व अधिक है। इसलिये एक भाषा-एक लिपि नीति के कारण अकादेमी ने सिंधी भाषा की अरबी लिपि को मान्यता दी है। पुरस्कार आदि केवल सिंधी की अरबी लिपि में प्रकाशित पुस्तकों पर दिये जाते हैं। परिणामत: वर्ष 2011 में प्रारम्भ हुआ अकादेमी का युवा लेखक पुरस्कार पहले चार वर्षों तक सिंधी के लेखक को मिला ही नहीं।

9 मार्च 1950 को आदेश जारी करके भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने सिंधी की देवनागरी लिपि को मान्यता दी थी। फिर अदालती निर्देशों की अनुपालना करते हुए 10 जनवरी 1951 को आदेश जारी करके देवनागरी या अरबी दोनों में से किसी भी लिपि का चयन करने की छूट दी गई। शिक्षा मंत्रालय ने 14 नवम्बर 1969 को उक्त आदेशों की अनुपालना के लिये अनुस्मरण भी जारी किया। इस प्रकार के आदेश भारतीय भाषाओं में से केवल और केवल सिंधी के लिये जारी हुए हैं। इसके बावजूद एक भाषा-एक लिपि की नीति की आड़ में साहित्य अकादेमी ने देवनागरी लिपि को मान्यता नहीं दी है और कुछ नहीं तो सरकारी आदेशों की पृष्ठभूमि में, अपवाद के रूप में सिंधी भाषा की देवनागरी व अरबी दोनों लिपियों को स्वीकृति क्यों नहीं दे सकती है साहित्य अकादेमी?

केन्द्र की साहित्य अकादेमी भाषा उन्नयन में नहीं, लिपि उन्नयन में रुचि ले रही है। जब राजस्थानी भाषा की आंचलिक विभिन्नताओं के बावजूद किसी भी क्षेत्र के डाइलेक्ट (मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी आदि) को पुरस्कारों में शामिल किया जा सकता है तो अन्य भारतीय भाषाओं की एकाधिक लिपियों को मान्यता क्यों नहीं दी जा सकती? भाषा और साहित्य के चौराहों पर खड़ा यह प्रश्न पुरज़ोर दस्तक दे रहा है।

संचय जैन अणुविभा के अध्यक्ष बने

अणुव्रत विश्व भारती की साधारण सभा में संचय जैन अध्यक्ष पद हेतु चुने गए। उनके पिताश्री मोहनभाई जैन ने गहन आस्था, कर्मनिष्ठा, अथक परिश्रम और त्याग से बाल-संस्कार के क्षेत्र में अणुव्रत विश्व भारती के माध्यम से बालोदय के रूप में सर्वथा नई संकल्पना एवं नवाचार सृजित किया। मोहनभाई जैन के कार्यों को आगे बढ़ाने में संचय जैन अणुव्रत विश्व भारती के कुशल व सफल संचालन में संकल्पित एवं समर्पित हैं। बालकों के जीवनमूल्यों के विकास हेतु 'बच्चों का देश' मासिक पत्रिका का सम्पादन भी बड़े मनोयोग पूर्वक कर रहे हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा इन्हें 'अणुव्रत सेवी सम्बोधन' तथा आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 'आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' प्रदान किया गया। शब्द रंजन की बधाई।

रेजा-रेजा चुभती हुयी जिंदगी

जिंदगी पतंग सी
हवा के रहम पर
हाथ में बस कच्ची कमंद
जायेगी उड़कर किधर
गिरेगी कहां, न कोई खबर
न कभी पता चला, न चल ही पायेगा।
जब भी सोचा-
'यह सब मेरा किया धरा
जब भी देखा मुड़कर जरा
था कोई 'अदृश्य' खड़ा
मैं चलता रहा -अलबत्ता
वो चलाता रहा- बेपत्ता
न कभी पता चला, न चल ही पायेगा।'
अच्छा हुआ न पता चला
नहीं जिक्र के काबिल यहां
जिसे होना था, होता गया
जिसे होना है, होता जायेगा
रेजा-रेजा चुभती हुयी
मजे-मजे चहकती हुयी
गुजर गयी, गुजर गयी
न कभी पता चला, न चल ही पायेगा।

- डॉ. ए. एल. दमामी

स्मृतियों के शिखर (59) : डॉ. महेन्द्र भानावत

उम्र से अधिक विश्व रिकार्ड का सिक्का जमाया सक्का ने

अनहोनी की होनी बहुत बिरलों के ही भाग्य में लिपिबद्ध होती है। उदयपुर के इकबाल सक्का के भाग्य में यह बदा था सो उनकी धुन चढ़ती गई और वे लगातार अपने पारम्परिक हुनर में स्वर्ण निर्मित सूक्ष्म से सूक्ष्मतम शिल्पों में अपना नाम रोशन करते रहे। ऐसा करते-करते अपनी उम्र से अधिक बार उन्होंने वर्ल्ड रिकार्ड बनाकर सबको चमत्कृत कर दिया। यह सिलसिला 1991 से भाग्योदय में आया जब उन्होंने 600 मिलीग्राम की सोने की चैन बनाकर गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया।

इकबाल भाई से पहलीबार मैं 10 जुलाई 1981 उनके खैरादीवाड़ा की पतली गली से सटे दस गुणा दस के छोटे से कमरे में मिला। यह एक छोटी सी तन्वंगी नाल के सहारे ऊपर की मंजिल पर था। आज भी वही कमरा है। वही काम है। वे ही औजार और वही सब तरतीब-बेतरतीब है जो तब था।

मुफलिसी का जीवन तब भी वैसा ही था जैसा आज है। अपने पिता ख्वाजा बख्श तथा चाचा पीर बख्श से खानदानी धंधा सीखा लेकिन बालिग होते-होते दोनों ही उन्हें छोड़ चले। सबसे बड़े लड़के होने पर घर की सारी जिम्मेदारियां ढोते इकबाल हिम्मत नहीं हारे।

इकबाल भाई की अच्छाई यह भी रही कि वे लगातार मिलते रहे और अपने द्वारा किये जा रहे कार्यों की खबर दिये रहे। दो जनवरी 1965 को जन्मे इकबाल शौकिया रूप में फिल्म और इल्म में भी गहरी रूचि रखते हैं। इस क्षेत्र में भी उन्होंने कमाल हांसिल किया है। फिल्मी दुनियां से भी उनका जुड़ाव बना। यदि वे उदयपुर छोड़ने की ठान लेते तो उस दुनियां में आज उनका बड़ा नाम होता।

वे बताते हैं कि 1980 के दौरान मुम्बई में उनकी भेंट व्ही शान्ताराम से उनके दादर स्थित रंजीत स्टूडियो में हुई तब उन्होंने रंगमंच, अभिनय और कहानी-लेखन के बारे में बहुत सारी जानकारी ली। उन्होंने ही इनको फिल्म राइटर्स एसोसिएशन का सदस्य बनवाया और 'धर्म हो तो ऐसा' नामक फिल्म के संवाद लिखवाये। किन्हीं कारणों से यह फिल्म रीलिज नहीं हो पाई।

फिल्मों की ओर उनका रूझान कैसे हुआ, पूछने पर वे थोड़ा पीछे चले गये। बोले, तब बम्बई से 'मूवी जगत' नाम से एक फिल्म पत्रिका निकलती थी। इस पत्रिका ने 'मिस्टर मूवी जगत इंडिया' नाम से एक प्रतियोगिता आयोजित की। उसमें देश के करीब दो हजार प्रतियोगियों ने भाग लिया। उनमें से एक ये भी थे। भाग्य की बात यह रही कि सम्पादक एच. आई. पाशा ने जब उन्हें निर्णायक मंडल की ओर से बधाई दी तथा मूवी जगत इंडिया की उपाधि से सम्मानित किया तो ये अकल्पनीय उत्साह से भर गये।

कहते हैं एक खिड़की जब खुलती है तो अन्य खिड़कियां भी खुलने को मचल पड़ती हैं। उन्हीं दिनों पाकिस्तान यात्रा का योग बना। वहां फिल्म निर्माता एवं निर्देशक ए. सिद्दीकी से इनकी भेंट हुई। सिद्दीकी ने इनके टेलेंट को देखते हुए टीवी धारावाहिक में एक छोटी सी भूमिका दी जिसका बड़ी खूबी के साथ निर्वाह किया। वहां से लौटने पर मुंबई में जी. राही ने 'धूप छांव' नामक एक टेलीफिल्म में खलनायक की भूमिका दी।

जब दौर चल पड़ा तो इकबाल सक्का ने राजस्थानी फिल्मों में अपना सिक्का दिखाना शुरू किया। मोहनसिंह राठौड़ निर्देशित भोमली देव, लिछमी आई आंगणे, वीरा बेगो आजे रे ; राकेश नाहटा व बकूल सोनी की छमक छल्लो, रमेश श्रीमाली की उदैपुर रो छोरो जैपुर री छोरी जैसी फिल्मों में ही नहीं, टीवी धारावाहिक महका आंगन, अंधेरों का शैतान, सात सिक्के, मझधार एवं अलख में कारगर भूमिका दे धूम मचा दी। इनके साथ खंजर, पेट्रोल नामक हिन्दी फिल्मों में गीत लिखे। यही नहीं, गीतों और गजलों के क्षेत्र में भी इकबाल सक्का ने अपना नाम बड़ा किया।

गजलों का गुलदस्ता, सक्काई नामा, राजस्थानी डिस्को नाम से इनकी प्रकाशित पुस्तकों ने लोकप्रियता की पगडंडियां तो नापीं ही साथ ही शगुन, धर्म का रिश्ता, उदैपुर रो छोरो जैपुर री छोरी, बावली, सांईबाबा फिल्म एवं बेबस, अलख टीवी धारावाहिक के गीत लिखकर भी अपनी अच्छी गूंज दी। अलख का गीत- 'गूंजे खुशी की सरगम / बांटे सबके गम / एक ऐसा अलख जगाएं तररम पम पम' युवा मनों का तराना ही बन गया। इकबाल सक्का की राजस्थानी हिन्दी ओडियो कैसेट्स भी एक नई हलचल दे रही है। अब तक बणजारा, झांझरियो खोवायो, सनीमो दिखादे रे, देवर भाभी री होली, जैपुरियो खरीद लायो, गणगौर, होली री चंग आदि बाजार में धमाके के साथ बज रही है।

इकबाल सक्का की दृष्टि में फिल्म क्षेत्र में राजस्थान और राजस्थानी में बहुत कुछ करने की गुंजाइश है। हिंदी फिल्मों में ही जब राजस्थानी गीत-नृत्य परिधान ने बड़ा रंग-रच दिया है तो राजस्थानी फिल्मों में तो वह सब कुछ दिया जा सकता है जिसके कारण यह प्रांत पूरी दुनियां का केसरिया बालम बना हुआ है।

फिल्मी जीवन के दौरान इकबाल सक्का उन दो घटनाओं को कभी नहीं भूल पायेंगे जिनमें वे पुनर्जीवित ही हुए हैं यानी मरते-मरते बचे हैं। सक्का बताते हैं कि खैरवाड़ा में जब उदैपुर रो छोरो जैपुर री छोरी का आऊटडोर पर एक दृश्य फिल्माया जा रहा था जिसमें नदी में लड़की दौड़ती है। उसका पीछा करते हुए हीरो बन ये भी दौड़ रहे थे कि इनका पांव फिसल गया जिससे ये नदी के पास एक कुए में जा गिरे। निर्देशक कट-कट करते रहे जबकि ये पानी में गुलांछी खाते हुए मौत से लड़ रहे थे। इतने में कैमरामेन जमील चांदीवाला की दृष्टि पड़ी तो वे भागे और कुए में कूद पड़े अन्यथा सक्का खुदा को प्यारे हो जाते तब से पानी के पास जाने में भी इन्हें डर लगता है।

दूसरी घटना अलख धारावाहिक के लिए फतहसागर के किनारे लिए जा रहे लोंग शॉट की है। ये सड़क पर चल रहे थे। पीछे-पीछे कैमरा चल रहा था कि अचानक ट्रक आ गया। ये उसके नीचे आते-आते बचे। तब इन्हें याद आया- 'जिसको अल्लाह रखे उसको कौन चखे?'

फिल्मों में अपनी कलाबाजी दिखाने के फलस्वरूप इकबाल सक्का को कलाश्री, मेवाड़ रत्न, मेवाड़ हीरा, भारत का रत्न जैसे अलंकरण-संबोधनों से सम्मानित किया गया।

इसे क्या कहा जाय कि धुन के धनी इस कला-शिल्पी ने दूसरों के रिकार्ड तो तोड़े ही पर अपने बनाये रिकार्ड भी तोड़े। 20 जुलाई 2018 को जब उनसे भेंट हुई तो गिनाना शुरू किया- लिम्बा बुक ऑफ रिकार्ड्स के लिए पतंग, चैन तथा पुस्तक बनाकर नामवरी ली।

केतली स्टाम्प जैसे पांच-छह आइटम्स बनाकर यूनिक वर्ल्ड रिकार्ड तोड़ा। इसी प्रकार घड़ा गिलास डोंगी के लिए बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड, क्रिकेट मैदान ट्राफी के लिए इंडिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड, शतरंज के लिए एवरेस्ट बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड बनाया। ऐसे ही सूक्ष्मातिसूक्ष्म चीजें बनाकर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड, अशिष्ट वर्ल्ड रिकार्ड, अमेजिंग वर्ल्ड रिकार्ड, जिनियस वर्ल्ड रिकार्ड, मिरेक्युलस वर्ल्ड रिकार्ड कायम किये। इनमें अधिकतर विदेशी रिकार्ड तोड़े हैं। सोने के कप, तिरंगा झंडा, चूल्हा, कड़ाई, डेंगची, बल्ब में फुटबॉल मैदान, दवात कलम कागज बनाकर सबको चकित कर दिया।

इन सबकी गवाही देते उनके दस फुटे कमरे में लगे गोल्ड मेडल, सम्मानपत्र तथा शॉल, श्रीफल, उपरने चमक-दमक देते अपनी कहनी कहते मिलते हैं। इन सबको बनाने में कभी कोई अनुकूल परिस्थिति नहीं देखी। इकबाल बताते हैं कि प्रतिकूल परिस्थिति ही जब हर समय देखने को मिली तो इसी को संतोष-सुख माना और बढ़ता गया। तमाशा देखने वालों से भी मैंने चुनौती ही ग्रहण की। कई बार लगता है, कुछ अच्छा और स्थायी काम अभावों में ही संघर्ष झेलकर होता है। वे सारे शिल्प जो उनके द्वारा निर्मित किये गये हैं वे खुली आंखों से नजर नहीं आते। उन्हें दिखाने के लिए सक्का अपने साथ ग्लास रखते हैं मगर इन्हें बनाने के लिए वे अपनी आंखें खुली रखते हैं। उनकी आंखों पर लगा चश्मा घर से बाहर जाने के लिए लगता है।

सक्का ने बताया कि उन्होंने एक-एक मिलीमीटर के शिल्प बनाये हैं। बारह नंबर की सुई के छेद से निकलने वाले शिल्प इतने हल्के हैं कि फूंक देने पर उड़ जाते हैं। पच्चीस मिलीग्राम वजनी 1600 कड़ियां बनाकर एक-एक कड़ी को वेल्ड कर चींटी जैसे सौ पीस बनाना सरल और चुटकी भरा काम नहीं है। इसके लिए आवश्यक औजार वे स्वयं ही तैयार करते हैं।

0.5 मिलीलीटर का तिरंगा झंडा वे केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय के म्युजियम में रखना चाहते हैं ताकि उनकी यादगार को स्थायीत्व मिल सके। जब उन्होंने संग्रहालय निर्माण के लिए सरकार को लिखा तो जवाब मिला कि आप जमीन की व्यवस्था करलें, उसके निर्माण पर अनुदान उपलब्ध करा दिया जायगा। देशभर की 50 से अधिक संस्थाओं ने इकबाल भाई के शिल्पों की भूरि-भूरि सराहना-प्रशंसा कर भरपूर प्रेम ओर सम्मान दिया।

सक्का के सम्बन्ध में पूछने पर इकबाल ने स्पष्ट किया कि यह भिश्ती कौम है जो पानी पिलाने का काम करती रही। बाद में सफाई का काम करने लगी। ये अपने पास चमड़े की बनी पखाल रखकर जहां-तहां सड़क नालियों की सफाई के लिए पानी का छिड़काव देते हैं। इनके यह कहने पर मुझे कठपुतली खेल में भिश्ती-प्रसंग में राजदरबार की सफाई कराते यह जुमला याद आ गया-

बादल भिश्ती, खेले कुश्ती, चले हस्ति कीचाल।
दूध कटोरा पी के मियां खांधे धरी पखाल।।

ढोलक बजानेवाली महिला राजदरबार की सफाई करवाती है। झाड़ूवाले के बाद 'भर लाना कटोरा पानी का' गीत के साथ ठुमकता ऐंठता हुआ बादल भिश्ती प्रवेश करता है। दोनों के मजेदार प्रहसन मोद भरे संवाद देखिये-

ढोलकवाली - (गाती है)
भर लाना कटोरा पानी का, मीठी बेरी का..
पानी भरने मैं गई सखा न भरने देय।
मैं सखा को क्या कियो जो गागर ही छिन लेय।।
और ये कौन कहते हैं?
भिश्ती -ये भिश्ती.... और ये छिड़काव लगाये
ढोलकवाली - क्या तुम सचमुच का पानी ला सकते हो?
भिश्ती -सचमुच का पानी तो सचमुच का आदमी लाता है जिसकी जान में लहू मांस होता है। हम तो काठ की पुतली हैं तो भी सचमुच का पानी लाके बतावें।

(भिश्ती का प्रस्थान और पुनर्आगमन)

ढोलकवाली - वाह! सचमुच का पानी लाये और सचमुच का छिड़काव लगाये और रिझबुझ हो गई तो चले जाना।

(भिश्ती का छिड़काव कर प्रस्थान)

इकबाल यह सुन तनिक सोच में पड़ जाते हैं। अमरसिंह राठौड़ के जमाने, मुगल बादशाह शाहजहां के समय की यह घटना अभी जीवंत बनी हुई है। इतिहास के पानड़ों में कौन याद रखेगा हमें मगर काम कहीं-न-कहीं यादगीरी दिला देता है। वे याद करते हैं निजामुद्दीन सक्का को जिसने चमड़े से सिक्के चलाकर उन पर सोने की मेख लगाई थी।

मैंने कहा- 'इकबाल भाई आप तो उससे भी आगे नजर आ रहे हो। कुल जमा 53 की उम्र में 56 विश्व रिकार्ड तोड़ कर सिक्का ही नया बना रहे हो। ऐसे तीये पर छक्का जड़ने वाला और कोई हो तो बताओ!'

सक्का क्या बोलते! उन्हें अपनी जमीन याद आ गई जहां से वे उठे। आज भी वैसे ही हैं। रिकार्ड बनाने पर भी वे क्या बनें! वे मौन ही बने रहे और अपनी राह पकड़ी।

जटिल त्वचा रोग का सफल उपचार

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में

चिकित्सकों ने एक वृद्धा की त्वचा के अंदर फैले जटिल रोग का सफल उपचार किया है।

पीआईएमएस के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों दर्शन कुंवर (70) को गंभीर मरणासन अवस्था में परिजन पीआईएमएस हॉस्पिटल लेकर आए और यहां डॉ. कमलेश कुंवर एवं चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ. शिवांगी शर्मा को दिखाया। जांच में मरीज को स्टेफाइलोकोकल सेल्युलाइटिस रोग से पीड़ित पाया गया। इसके कारण पूरे पैर एवं जननांगों में बड़े-बड़े पानी के छाले, सूजन, अंदर तक माँस एवं वसा सड़ जाने से मरीज़ मरणासन अवस्था में थी। यहाँ मरीज के कई टेस्ट किये गए। रात-दिन विश्वस्तरीय चिकित्सा के बाद आश्चर्यजनक सुधार हुआ। मरीज की हालत में अब सुधार है। परिजनों ने हॉस्पिटल, चेयरमैन, चिकित्सकों एवं पूरी टीम को धन्यवाद दिया है।

यूएई द्वारा भारतीयों के लिए ओन अराईवल वीसा का ओफर

उदयपुर। यूएई के सबसे विशाल कोन्लोमरेट डेन्यूब ग्रूप के अनुसार भारतीयों के लिए वीसा ओन अराईवल की ओफर एवं विदेश निवेशकों के लिए 10 साल के लिए बढ़ाई गई रेसिडन्सी परमिट की वजह से प्रगतिशील अर्थतंत्र में निवेश को ज्यादा बढ़ावा मिलेगा। भारतीय नागरिकों ने दुबई के रियल एस्टेट में सबसे विशाल फोरेन ईन्वेस्टर ग्रूप बनाया है। उन्होंने पिछले पांच साल 2013 से 2017 के दौरान 83.65 बिलियन दिरहाम प्रोपर्टी में निवेश किया है ऐसी जानकारी दुबई लेन्ड डिपार्टमेन्ट (डीएलडी) के अंकों से प्राप्त हुई है। डेन्यूब ग्रूप के संस्थापक एवं चेयरमेन रिझवान साजन ने बताया कि भारतीय नागरिक दुबई में सबसे बड़ी एकमात्र विदेशी जनसंख्या है, जिसके लिए सरकार का अनुमान है की यूएई और भारत के बीच व्यापार वर्ष 2020 तक 100 बिलियन डॉलर का होगा। यूएई केबिनेट के हालिया दो निर्णय जिनमें विदेशी निवेशकों, योग्यता प्राप्त प्रोफेशनल्स एवं प्रतिभावंत छात्रों के लिए 10 साल तक रेसिडन्सी परमिट बढ़ानी और प्राईवेट कंपनियों की 100 प्रतिशत ओनरशीप देने की वजह से देश के रियल एस्टेट मार्केट में बड़ा निवेश अपेक्षित है।

हार्पिक का पांच रुपए में एक्सेस पैक लॉन्च

उदयपुर। टॉयलेट सफाई श्रेणी में अग्रणी हार्पिक ने अपने स्वच्छ, भारतपैक को लॉन्च करने के साथ अपने नए अभियान 'मेकइंडिया टॉयलेट प्राउड' के जरिये स्वच्छता के लिए सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया है। इस अभियान का उद्देश्य सफाई के काम को सामान्य बनाकर व्यवहार परिवर्तन लाना है। यह प्रत्येक भारतीय को टॉयलेट की सफाई से जुड़ी वर्जनाओं को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करता है और चमकदार स्वच्छ टॉयलेट का मालिक होने पर गर्व महसूस करवाता है। नया लॉन्च हुआ 'स्वच्छ भारत पैक' एक नई पैकेजिंग इन्नोवेशन के साथ आता है जो उपभोक्ताओं को 5 रुपए वाले सिंगल यूजपैक के साथ बोतल जैसा अनुभव प्रदान करता है। हाइजीन होम के सीएमओ, मार्केटिंग डायरेक्टर, सुखलीन अनेजा ने कहा कि हार्पिक न केवल लोगों से टॉयलेट बनाने का आग्रह करता है, बल्कि उनकी देखभाल करने, नियमित रूप से सफाई करने और इस पर गर्व करने का आग्रह करता है।

रॉयल स्टैग एशिया कप 2018 का प्रायोजक

उदयपुर। आगामी एशिया कप 2018 के लिए रॉयल स्टैग को एसोसिएट प्रायोजक बनाया गया है। पर्नोड रिकार्ड इंडिया के मुख्य मार्केटिंग अधिकारी कार्तिक मोहिन्द्रा ने कहा कि क्रिकेट के साथ अपने सहयोग को मजबूत बनाते हुए रॉयल स्टैग पूरे देश के प्रशंसकों को दुबई जाने और एशिया कप में पाकिस्तान के साथ भारत की भिड़ंत के दौरान मौजूद रहने का जीवनकालिक मौका दे रहा है। प्रशंसक रॉयल स्टैग के 'इंडियाज लार्जेस्ट फैन' कॉन्टेस्ट में भाग लेकर दुबई में भारत-पाकिस्तान के बीच मुकाबले को लाइव देखने वाले 100 भाग्यशाली विजेताओं में से एक बन सकते हैं। इस कॉन्टेस्ट में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को सिर्फ 91 97189-97189 पर मिस्ड कॉल देना होगा। कार्तिक मोहिन्द्रा ने कहा कि रॉयल स्टैग का 'इंडियाज लार्जेस्ट फैन' कॉन्टेस्ट प्रशंसकों के लिए क्रिकेट स्टेडियम में भारत-पाकिस्तान को खेलते देखने के अपने सपने को पूरा करने का एक शानदार मौका है और हम इसे एक अद्भुत जीवनकालिक अनुभव बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

गणेश चतुर्थी पर बोहरा गणेशजी की विशेष शृंगारित प्रतिमा। इस अवसर पर मावा गणेशजी, पाला गणेशजी, दूधिया गणेशजी, जाड़ा गणेशजी के मंदिरों पर भी भव्य आयोजन हुए।

गत दिनों उदयपुर प्रवास के दौरान प्रख्यात राजनीतिक विश्लेषक डॉ. वेदप्रताप वैदिक डॉ. भानावत के निवास पर पधारे। पारिवारिक कुशलक्षेम के साथ वर्तमान में राजनीतिक हलचल से देश में हो रही उठापटक पर वैदिकजी ने बेबाक टिप्पणियां कीं। डॉ. महेन्द्र भानावत ने काष्ठकला की विश्वविख्यात पारंपरिक कृति कावड़ भेंट की तथा डॉ. तुक्तक भानावत ने शब्द रंजन बाबत चर्चा की।

मोतियाबिंद के ऑपरेशन में अब न टांका न इंजेक्शन जरूरी

उदयपुर। मोतियाबिंद के उपचार में अब न टांके की जरूरत पड़ती है ना ही इंजेक्शन लगाना पड़ता है। इस सर्जरी में

इतना ज्यादा परफेक्शन आ चुका है कि ऑपरेशन के बाद चश्मे की भी कोई जरूरत नहीं पड़ती। यह सब संभव हुआ है नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में उपलब्ध नई तकनीकों तथा अनुभवी व दक्ष चिकित्सकों के अथक परिश्रम के बलबूते पर। जिन नई तकनीकों से आज अमेरिका, यूरोप, एशिया, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य माहद्वीपों के हाइटेक समझे जाने वाले देशों में उपचार हो रहा है, वे सभी उदयपुर के अलख नयन मंदिर में उपलब्ध है। ये विचार उदयपुर ऑप्थेल्मोलोजी सोसायटी व अलख नयन मंदिर आई इंस्टीट्यूट की ओर से आयोजित लाइव कार्यशाला में अलख नयन मंदिर आई इंस्टीट्यूट के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल.एस. झाला ने व्यक्त किए।

पहले सत्र में नामी चिकित्सक-सर्जन ने लाइव सर्जरी की। मुंबई के बॉम्बे सिटी आई इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर के सर्जन डॉ. सोमिल कोठारी, एयूवीआई आई हॉस्पिटल कोटा के डॉ. सुरेश पांडे, अलख नयन मंदिर के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल.एस. झाला, अलख नयन के रेटिना सर्जन डॉ. साकेत आर्य, आरएनटी मेडिकल कॉलेज में डिपार्टमेंट ऑफ आप्थेल्मोलॉजी के एचओडी डॉ. अशोक बैरवा आदि ने लाइव सर्जरी के माध्यम से कई नई उपचार विधियों तथा तकनीकी पहलुओं पर प्रतिभागी देशभर से आए चिकित्सकों के समक्ष विचार व्यक्त किए।

येस बैंक द्वारा उदयपुर के लिए नकदी रहित समाधान लांच

उदयपुर। निजी क्षेत्र में भारत के चौथे सबसे बड़े बैंक येस बैंक ने उदयपुर नगर निगम (यूएमसी) के साथ साझेदारी में उदयपुर स्मार्ट सिटी के लिए एक व्यापक नकद रहित भुगतान समाधान शुरू किया, ताकि भारत सरकार के वित्तीय समावेश और डिजिटल भारत की पहल को बढ़ावा दिया जा सके। परियोजना को नगर निगम महापौर चंद्रसिंह कोठारी और नगर निगम आयुक्त एवं उदयपुर स्मार्ट सिटी लि. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिद्धार्थ सिहाग ने लांच किया।

येस बैंक के प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री राणा कपूर ने कहा कि इस परियोजना के एक हिस्से के रूप में, येस बैंक ने सरकार से नागरिक (जी2सी) सेवाओं के साथ-साथ खुदरा भुगतान के लिए डिजिटलीकृत भुगतान किया है। समाधान नागरिकों को भारत क्यूआर या भीम (बीएचआईएम) यूपीआई क्यूआर और डिजिटल वॉलेट के माध्यम से तत्काल भुगतान करने की इजाजत देता है, विशेष रूप से उदयपुर के नागरिकों के लिए डिजाइन किया गया। उदयपुर निवासियों के साथ-साथ पर्यटक अब भी उपयोगिता भुगतान, परिवहन, फीस, चिकित्सा खर्च किराने और मनोरंजन के लिए विभिन्न भुगतान विकल्पों दिन-प्रतिदिन भुगतान कर सकते हैं, जैसे कि पीओएस, ई-कॉमर्स के माध्यम से कार्ड भुगतान या क्यूआर कोड और मोबाइल नंबर के माध्यम से मोबाइल भुगतान।

महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने कहा कि डिजिटल भारत के मुहिम में यूएससीएल एवं येस बैंक की पहल से उदयपुर के नागरिकों के लिए कैशलेस सुविधा के रूप में भीम (बीएचआईएम) यूपीआई क्यूआर कोड से भुगतान करना सुविधाजनक और सुरक्षित हैं।

आयुक्त सिद्धार्थ सिहाग ने कहा कि डिजिटल भुगतान एक प्रकार का भविष्य है और हम इसे उदयपुर के नागरिकों के लिए सुविधाजनक बनाने के लिए येस बैंक के साथ हाथ मिलाकर खुश हैं। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही यहां के नागरिकों के लिए उदयपुर स्मार्ट सिटी कार्ड भी जारी किए जाएंगे, जिसके माध्यम से लोग उदयपुर के 700 खुदरा व्यापारियों एवं सरकारी संस्थानों को भुगतान कर सकेंगे। इसके अलावा मोबाल वॉलेट का प्रावधान भी रखा गया है।

डॉ. सिंघानिया को मैक्सिको का उच्चतम नागरिक सम्मान

उदयपुर। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया को मैक्सिको सरकार द्वारा विदेशी नागरिकों के लिये देश के उच्चतम सम्मान 'मैक्सिकन ऑर्डर ऑफ इ एजटेक ईगल' से सम्मानित किया गया। मैक्सिको के 128वें राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर भारत में मैक्सिको की राजदूत माननीय सुश्री मेल्बा प्रिया ने मैक्सिको के राष्ट्रपति की ओर से डॉ. सिंघानिया को पुरस्कृत किया। यह शीर्ष सम्मान डॉ. सिंघानिया के नेतृत्व, मानवता के प्रति उनकी उल्लेखनीय सेवाओं और भारत एवं मैक्सिको के बीच द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने के उनके प्रयासों को दर्शाता है।

इस अवसर पर डॉ. सिंघानिया ने कहा कि मेरे लिये यह सम्मान की बात है कि माननीय सुश्री मेल्बा प्रिया ने मुझे सम्मानित किया। मैक्सिको में निवेश में भारतीय व्यावसायों के बीच रूचि का निर्माण करने में एक प्रमुख भूमिका निभाना मेरे लिये सौभाग्य की बात है। मेरे पास मैक्सिको के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फेलिप के साथ टॉर्नेल के बारे में मेरी पहली बातचीत की खुशनुमा यादें हैं। उसके बाद कई बार सरकारों के साथ मेरा संवाद हुआ और यह इतिहास बन चुका है। मैक्सिको सरकार ने वाकई में विदेशी निवेश का खुले हाथों से स्वागत कर व्यावसायों को बढ़ावा दिया है। यह उद्योग की दिशा में मैक्सिको की सरकार के सहयोगी रवैये को दर्शाता है।

52 दिव्यांग व निर्धन जोड़ों को मिली खुशियों की सौगात

उदयपुर। जीवन भर के लिए रिश्तों की डोर बंधी तो मन बार-बार हर्षित हुआ। यादगार लम्हों के साक्षी बनें अपनों के दुलार ने जीवन के हर दर्द को भुला दिया। उमंगों से परिपूर्ण

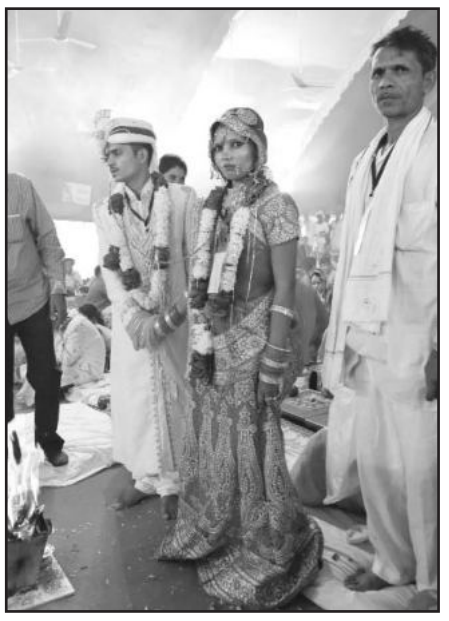

दिव्य वातावरण में दिव्यांगता का दंश पीछे छूट अतीत में खो गया और नए जीवन साथी के साथ जीवन की नई राहों ने दस्तक दी। शाही इंतजामों के बीच नाते-रिश्तेदारों, दोस्तों ने हंसी-ठिठौली के बीच खूब स्नेह लुटाया। देशभर से आए धर्म माता-पिता के सान्निध्य ने अभिभूत और भावुक कर दिया। गणमान्यजनों की मौजूदगी ने दिव्य आयोजन की आभा में चार-चांद लगा दिए।

हजारों लोगों की साक्षी में यह अनूठा अवसर था नारायण सेवा संस्थान की ओर से लियों का गुड़ा बड़ी स्थित मुख्यालय पर 9 सितंबर को आयोजित हुए 31वें भव्य विशाल निशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह का। इसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए 52 जोड़े पारम्परिक रस्मों रिवाज से सात जन्मों के बंधन में बंधे। नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश 'मानव', सह संस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल, ट्रस्ट्री देवेंद्र चौबीसा, जगदीश आर्य के सान्निध्य में हुए इस समारोह में आशीर्वाद, आशीर्वचन, आस्था और अपनेपन की अद्‌भुत झलक देखने को मिली। विवाह समारोह का जो भी साक्षी बना, भाव-विभोर हो गया।

शुभ मुहूर्त में विवाह समारोह की रस्मों की शुरुआत हुई जिसमें दूल्हों ने नीम की डाली से तोरण की रस्म अदा की। इसके बाद संस्थान परिसर में बने विशाल पांडाल में देशभर से आए हजारों लोगों की मौजूदगी में वरमाला एवं आशीर्वाद समारोह हुआ। शादी के जोड़ों में सजे दूल्हा-दुल्हन ने बारी-बारी से एक-दूसरे को वरमाला पहना हमेशा के लिए रिश्ते की डोर को अपनेपन के उल्लास के साथ जोड़ दिया। तालियों की गड़गड़ाहट, मंगल गीतों की आह्लादित करती वेला में विशेष तौर पर बनाए गए हाइड्रोलिक मंच पर पांच जोड़ों की वरमाला दृश्य तो बस देखते ही बन पड़ा। घूमते हुए मंच पर पुष्प वर्षा व भव्य आतिशबाजी के बीच वर-वधू ने वरमाला की रस्म अदा की तो खचाखच भरे डोम व उसके बाहर मौजूद हजारों लोगों ने बार-बार करतल ध्वनि से स्वागत किया। उनके फोटो व सेल्फी लेने की भी होड़ मच गई। जोड़ों में कोई दूल्हा दिव्यांग था, तो कोई दुल्हन, तो कोई दोनों मगर उत्साह सबका देखते ही बना। वरमाला के दौरान कोई दूल्हा कृत्रिम उपकरणों की मदद से वरमाला लिए कोई आगे बढ़ा तो कोई जमीन पर हाथों व पैरों की मदद से, तो कहीं कोई व्हील चेयर पर वरमाला लिए बढ़ा। इस दौरान विवाह के पारम्परिक व फिल्मी गीतों व धुनों पर पूरा पांडाल ही थिरक उठा। इससे पूर्व अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल की मौजूदगी व धर्म माता-पिता के आशीर्वाद के बीच संपन्न हुईं। पाणिग्रहण संस्कार के बाद विवाह की अन्य रस्में हुईं। वर-वधुओं को आशीर्वाद प्रदान करने दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुड़गांव, जोधपुर, इंदौर, आगरा, नागपुर, हैदराबाद, अलीगढ़, पूना, राजकोट, देहरादून, पटना, बड़ौदा सहित देश के कई राज्यों व शहरों से

आदि डोली में दुल्हन को लेकर पहुंचे तो पूरा पांडाल ही थिरक उठा।

समारोह में अतिथि रानी दुलानी मुम्बई, पंकज चौधरी हैदराबाद, कुसुम गुप्ता दिल्ली, अलका चौधरी हैदराबाद, प्रेम निजमन दिल्ली, हरी निवासजी आगरा, प्रभुनाथ सिंह इलाहबाद, राधा रानी फरीदाबाद, विजेंद्र दत्त दिल्ली, आरएस अरोड़ा दिल्ली, बालकृष्ण तिवारी इंदौर, ने आशीर्वचन प्रदान किए।

वरमाला के बाद विवाह स्थल पर ही तैयार वेदियों पर मुख्य आचार्य के मार्गदर्शन में विवाह की सभी रस्में विधि-विधान के साथ संत समुदाय संस्थान के सहयोगी एवं अतिथिगण पधारे। समारोह में आयोजक समितियों के दल्लाराम पटेल, रोहित तिवारी, दीपक मेनारिया, मनीष परिहार, भगवती मेनारिया, दिनेश वैष्णव, कुलदीप शेखावत, अम्बालाल, जितेंद्र गौड़, दिग्विजय सिंह, अनिल आचार्य और रजत गौड़ विभिन्न व्यवस्थाओं में सहभागी बने। संचालन महिम जैन ने किया।

शादी की खुशियों के बीच जब दिव्यांग बहनों की विदाई की वेला आई तो पांडाल में मौजूद सभी लोगों की आंखें छलक पड़ी। दूल्हनों को डोली में बिठाया गया। परिजनों, मित्रों के साथ ही धर्म माता-पिता ने मंगल आशीष के साथ बेटियों को विदा किया।

परिजनों ने नारायण सेवा संस्थान परिवार का आभार जताया। संस्थान की ओर से सभी जोड़ों को उनके गांव, शहर में स्थित निवास स्थान तक छोड़ने के लिए विशेष बस, कारों व अन्य वाहनों की निशुल्क व्यवस्था की गई। जोड़ों को गृहस्थी के लिए आवश्यक सामान के रूप में थाली, कटोरी, गिलास, स्टील की कोठी, बर्तन, कूकर, क्राकरी, सिलाई मशीन, डिनर सेट, गैस चूल्हा, कंबल, बेडशीट्स, तकिया, घड़ी, साडियां, पेंट-शर्ट्स, सोने का मंगलसूत्र, चांदी की पायल, बिछिया, अंगूठी सहित अन्य घरेलू सामग्री प्रदान की गई। इसके साथ ही धर्म माता-पिता की ओर से भी उपहार दिए गए। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की ओर से राजस्थान सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा ऐसे भव्य आयोजन के लिए प्रशस्ति पत्र भेंट किया।

ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी द्वारा आर्चीज गैलेक्सी टाउनशिप के सेम्पल फ्लैट का अवलोकन

उदयपुर। ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय की विश्वविख्यात मोटिवेशनल स्पीकर शिवानी दीदी ने मंगलवार शाम आर्चीज गैलेक्सी के देबारी पावर हाउस के सामने स्थित सेम्पल फ्लैट का अवलोकन किया।

शिवानी दीदी ने पॉजिटिव वाइब्रेशन के साथ शुभाशीष देते हुए बड़ी संख्या में मौजूद लोगों से कहा कि संस्कार बदलेंगे तो संसार बदल जाएगा। हमें अपने संस्कार को बदल कर अपने घर को स्वर्ग बनाना है। संस्कार बदल जाएंगे तो घर में भी सुख-शांति और पवित्रता होगी।

आर्ची समूह के ऋषभ भाणावत एवं संजय भाटिया ने बताया कि अपने उद्‌बोधन में शिवानी दीदी ने कहा कि हर पल परमात्मा की याद में रहिये। हमें परमात्मा के सुख और शांति के वाइब्रेशन को चारों और फैला कर जग में शांति लानी है। परमात्मा ने कहा है कि ऐसी सेवा करनी है कि घर-घर सतयुग का अहसास हो। यहां बनने वाली कॉलोनी व उसमें रहने वाले सभी लोग परमात्मा की ज्ञान और शक्ति के प्रतीक बन जाएं।

इससे पहले डूंगरसिंह कोठारी, शैलेष सरूपरिया, हिमांशु चौधरी, लोकेश मलारा, संभव बांठिया, राजीव जैन, शीतल भाणावत, महावीर भाणावत आदि ने शिवानी दीदी का स्वागत किया।

शिवानी दीदी ने कहा कि कलयुग में आराम की चीजें भी दुख का कारण बन गई हैं जैसे कि फोन। फोन बना तो आराम देने के लिए था मगर बहुत से लोग इससे दुखी हो जाते हैं। ऐसे में हम जो भी काम कर रहे हैं उसका इंटेशन क्लीयर होना चाहिए। कोई भी नया कार्य शुरू करते हैं तो उसमें सबसे पहले परमात्मा की याद का श्रेष्ठ संकल्प डालना है। कई बार हम कहते हैं कि कार्य शुरू होते ही उसमें विघ्न आ जाते हैं, हम दुआ करते हैं कि विघ्न हट जाएं लेकिन जो कार्य शुरू से ही परमात्मा व लोगों की दुआ से शुरू हो रहा है उसमें विघ्न आ ही नहीं सकता। आप घर बाहर या कारोबार में हो, या कोई भी काम करो। सबसे पहले संकल्प करो कि मेरे हर काम में परमात्मा की शक्तियां भरी हुई हैं। परमात्मा की याद की एनर्जी से किया गया काम सफल होता है क्योंकि वहां हर काम अच्छा काम है।

दीदी ने कहा, मेडिटेशन करों। उसकी शक्ति से चलते-फिरते कार्य करते हुए परमात्मा की याद की शक्ति से ओतप्रोत रहो। हम परमात्मा को याद करेंगे तो उसकी शक्ति हमारे अंदर व कार्य में आ जाएगी। हमारा कार्य निर्विघन और सफल हो जाएगा। काम करते हुए हमारे मन की स्थिति चिंता, डर आदि इमोशन सामने आते हैं। हमें संकल्पों पर ध्यान देना है। दीदी बोलीं, विधि सही तो सिद्धि सही और सफलता निश्चित। इस अवसर पर उदयपुर ब्रह्माकुमारीज सेंटर की बीके रीटा दीदी और बीके विजलयलक्ष्मी दीदी ने भी आशीर्वचन दिए।

उल्लेखनीय है कि 'आर्ची समूह' देबारी में एलआईजी व ईल्ब्यूएस वर्ग के लिए 620 फ्लैट की सौगात लेकर आया है। निर्माण की दुनिया में 'गेम चेंजर' कही जाने वाली 'आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप' का काम यहां पावरहाउस के सामने राजमार्ग से मात्र 50 मीटर दूर शुरू हो गया है।

टाउनशिप से एयरपोर्ट मात्र 10 किलोमीटर, 10 मिनट के रास्ते पर है। यहां लोअर इनकम ग्रुप (एलआईजी) के लिए 420 व इकॉनोमिकल वीकर सेक्शन (ईडब्ल्यूएस) के लिए 200 फ्लैट की सौगात दी जा रही है।

राजस्थानी कुमारिकाओं की संझ्या : गुड़गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो जाय

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

सांझी का यह लेख पहलीबार धर्मयुग में 25 सितम्बर 1960 के अंक में प्रकाशित हुआ था। इसका असर यह रहा कि अन्य विद्वानों ने अपने-अपने अंचलों में प्रचलित सांझी पर लिखा और धर्मयुग तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं ने ब्रज, मालवा, महाराष्ट्र, हरियाणा आदि प्रांतों की सांझी पर सामग्री प्रकाशित की। मैंने भी धर्मयुग में ही कुमारिकाओं की इस सांझी के अलावा पुष्टिमार्गीय मंदिरों में प्रचलित जल पर बनने वाली सांझी, जमीन पर विविध रंगों तथा फल-फूलों से सजाने वाली सांझी तथा नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में केले के पत्तों से चितराई जाने वाली सांझी पर लिखा।

उन्हीं दिनों डॉ. श्याम परमार ने मुझे एक पोस्टकार्ड में लिखा कि बालिकाओं द्वारा बनाई जाने वाली जिस सांझी पर मैंने लिखा वैसी ही मध्यप्रदेश, मालवा में प्रचलित है। गीत भी लगभग वे ही मिलते हैं। उससे अधिक जानकारी यदि हो तो प्रकाश में आनी चाहिये। उनके इस पत्र ने मुझे सांझी पर शोध करने की प्रेरणा जगाई और मैंने घूमफिरकर बहुत सारी सामग्री एकत्र की जिसका प्रकाशन 'राजस्थान की संझ्या' नाम से सन् 1977 में भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर ने किया।

इसी सांझी पर मेरी आत्मजा डॉ. कहानी भानावत ने सन् 1993 में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ के निर्देशन में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की जो मीरां कन्या महाविद्यालय, उदयपुर में चित्रकला की व्याख्याता है।

सांझी की यह धारा नैरन्तर्य बनी अविराम प्रवाहित होती रही। इसी पर उज्जैन की परिकल्पा संस्था में वहां के विक्रम विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने अखिल भारतीय संगोष्ठी का उल्लेखनीय आयोजन किया। इसमें मैंने मनासा से बालकवि बैरागी तथा डॉ. पूरन सहगल के साथ भाग लिया। भोपाल से हमारे मित्र बसंत निरगुणे भी आ गये थे। वह दिन भागजोग से 25 सितम्बर 2011 का था। मुझे धर्मयुग में छपा यह लेख याद हो आया। वहां मैंने इसका जिक्र करते कहा भी कि एक लेखक के लिए उससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है कि 51 वर्ष पूर्व आज ही के दिन जिस सांझी पर मैंने पहलीबार धर्मयुग में लिखा उस पर आज इतनी बड़ी संगोष्ठी आयोजित हो रही है। एक लेखक को अपने लेखन का प्रवाह और प्रभाव देखने के लिए अधिक नहीं तो भी 50 वर्ष तक का धैर्य रखना चाहिये। फिर वह आत्म विश्लेषण करे कि वह किस पायदान पर कितना सार्थकपन लिए खड़ा है।

संझ्या राजस्थानी कुमारिकाओं का अत्यन्त रंगीन त्यौहार है, जिसे श्राद्ध पक्ष में मनाया जाता है। बालिकाएं आश्विन की प्रतिपदा से लेकर पितृपक्ष के पन्द्रह दिनों तक

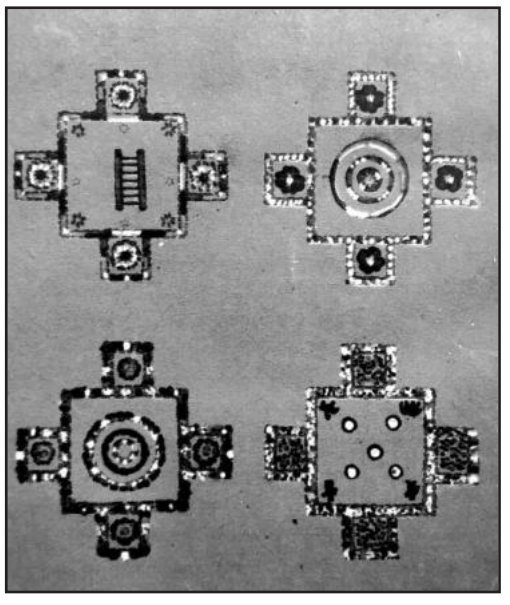

घरों के बाहर द्वार के एक ओर हड़मची (एक प्रकार का रंग) की गोहली (घेरा) देकर गोबर तथा पीली मिट्टी की सहायता से नित्य-प्रति नई-नई आकृतियों की संझ्या बनाती हुई नजर आती हैं। कनेर के श्वेत, कटेल के केसरिया, तुरई के पीले तथा हजारी, छोर्‌यांगल आदि के पुष्पों से संध्या समय सूर्यास्त से पूर्व संझ्या को सजाती-शृंगार कराती हुई कुमारिकाएं पूरे पन्द्रह दिनों का क्रमश: एक तारा, पांच पचेटा, सूरज, चांद, वांदरवाल, केल, पंखा, चौपड़, पांच सात्या, मोर, छाबड़ी, बीजणी, जनेउ तथा संझ्या बाई की बरात जैसी संझ्या सम्बन्धी विविध आकृतियों को माण्डने में अत्यनत व्यस्त रहती हैं। इन माण्डनों में ये लड़कियां अत्यन्त दक्ष होती हैं। छोटी-छोटी बालिकाएं भी अपनी अलग संझ्या बनाती हैं जिन्हें पूर्ण करने में उनकी माताएं, बड़ी बहिनें तथा पड़ोसी औरतें पूरी सहायता करती हैं। प्रतिदिन प्रात: होते ही संझ्या दीवाल से हटाकर घर के बाहर रास्ते में वरादी (रखदी) जाती है।

मेवाड़ में संझ्या :

मेवाड़ की ओर संझ्या का कुछ भिन्न रूप हमें देखने को मिलता है। इधर प्रारम्भ के दस दिनों तक पांच टोपे, फूल, छाबड़ी, वाटका, निसरनी, पांच वाटके, बीजणी, वांदरवाल तथा खजूर की आकृतियों की संझ्याएं मांडी जाती हैं। ग्यारहवें दिन कोट तथा उसके पास छोटी सी संझ्या बनाई जाती है, जिसे विविध प्रकार के पुष्पों के बजाय केवल केले के पत्तों से सुशोभित किया जाता है। यह कोट अमावस्या तक उसी हालत में रहता है। कोट उसी गोहली (रंग के घेरे) पर मांडा जाता है। गोहली के बाहर चार खुण्या और तीन पुतलियां बनाई जाती हैं। ऊपर ही ऊपर एक ओर सूरज तथा दूसरी ओर चांद बिठाये जाते हैं और उनके पास एक तोता होता है।

कोट के अन्दर पनवाड़ियें, चार जोगियों की जमात, वांदरवाल, पांच पचेटे तथा कोचवान गाड़ी चलाता हुआ दशार्या जाता है। नीचे की ओर 'जाड़ी जसोदा', 'पतली पेमा', 'खापर्‌या चोर', 'गुजराणी', 'भंगन' तथा 'ढोली' दिखाये जाते हैं। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावनाओं से लड़कियां कोट बनाने में अत्यन्त सावधानी तथा चतुराई बरतती हैं और अपनी कला में कमाल दिखाती हैं।

प्रतिदिन सवेरा होते ही सभी लड़कियां छोटी सी कटोरी में दूध लिये अपने-अपने घरों से निकल पड़ती हैं और घर-घर जाकर जहां-जहां कोट बने होते हैं, वहां-वहां अपनी अंगुलियों की सहायता से दूध छिटक आती हैं। संध्या को दूध न छिटककर सभी कुमारिकाएं कूलर (घी तथा शक्कर मिला आटा) ही छिटकती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। अमावस्या के दिन सभी बालिकाएं दूध तथा कूलर छिटकना बन्द कर देती हैं। यह अंतिम दिन होता है, जिस दिन की संध्या को कोट बोरा दिया जाता है। इस दिन कोट का एकासणा (व्रत) रहता है।

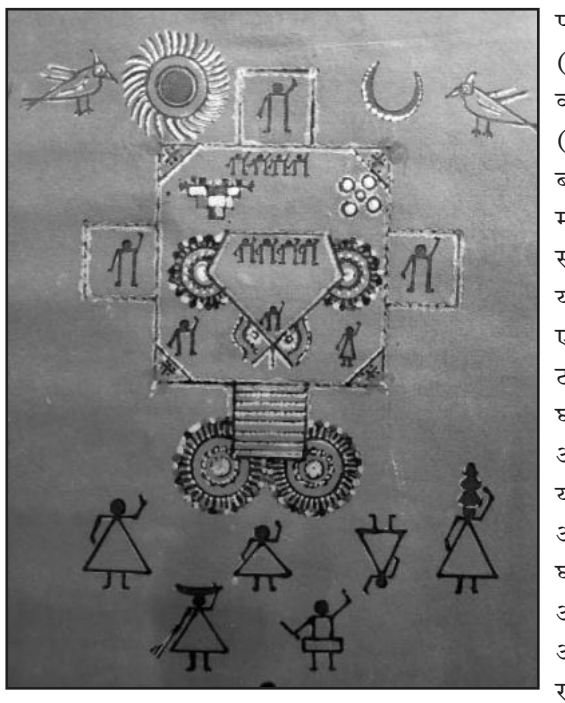

दोपहर में संझ्या तथा कोट को गिराया जाता है। संध्या को पास-पड़ोस की सभी लड़कियां समूह रूप में नये-नये कोर-किनारीदार वस्त्राभूषणों से अलंकृत हो जलाशय की ओर गमन करती हैं। अपने साथ गोठाके (प्रसाद) के रूप में ज्वार की फूली, भूंगड़ी (सिके हुए चने), मुरमरी (सेव), मूंगफली आदि ले जाती हैं और वहां जाकर पानी में कोट बोराकर अपने साथ लाई मिट्टी की बनी कुलकियों (कुल्हड़) से पास ही लगे आम, पीपली, नीमड़ी आदि के पौधों को सोलह बार पानी भर कर सींचती हैं फिर हरी दूब पर सभी एकत्रित हो अपने-अपने प्रसाद को आपस में बांटती हुई मनोरंजन करती हैं। कोट गिराने के बाद गोहली पर कंकू का सात्या (स्वस्तिक) बना दिया जाता है जो जब तक लींपा-पूती नहीं होती तब तक बना रहता है।

संझ्या बाई को सासरो गढ़ अजमेर :

विवाहित लड़कियां भी कोट बनाती हैं, परन्तु वे भांति-भांति की मालीपना (पन्नी) की सहायता से अच्छे मोटे कागज पर बनाती हैं जो उनके घर ही (पीहर में) सुरक्षित रहता है। कोट बोराने के दिन उनके घर में श्रद्धानुसार मकई की घूघरी (एक प्रकार की खाद्य सामग्री) बनाई जाती है। कुम्भकार के यहां से सोलह कुल्हड़ लाकर उनमें एक-एक पैसा तथा लाल कागज की टीकिया रखकर उनके लच्छे बांधकर घूघरी सहित नये कपड़ों के साथ चून्दड़ ओढ़ाकर खास-खास सम्बन्धियों के यहां एक-एक कुल्हड़ रख आती हैं और बाकी बची घूघरी आस-पास के घरों में लेणों (नमूनों) के रूप में रख आती हैं। विवाहिताएं शादी के बाद आने वाली प्रथम संझ्या को ही यह रस्म अदा करती हैं।

मारवाड़ में इस सम्बन्ध में कुछ गीत प्रचलित हैं। उन गीतों में -

संझ्या बाई को सासरो गढ़ अजमेर,
परण पधार्‌या सांगानेर
राणीजी की चाकरी, कल्याणजी को देस
छोड़ो म्हांकी चाकरी, पधारो थां के देस

तथा

गुड़ गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो जाय
जीमें म्हां का संझ्या बाई बैठ्‌या जाय
घाघरी घमकाता जाए
लूगड़ी चमकाता जाए
टोकली भड़काता जाए
चूड़ल्यो चमकाता जाए
जीमें म्हांका संझ्या बाई बैठ्‌या जाए।

गीत अत्यधिक लोकप्रिय हैं। संझ्या त्यौहार कब से मनाया जा रहा है तथा इसके पीछे क्या दंत-कथा है, इसकी जानकारी अभी अन्धकार में ही है परन्तु इतना जरूर कहा जा सकता है कि संझ्या कोई छोटी लड़की थी, शादी के कुछ ही समय बाद जिसकी मृत्यु हो गई थी, सम्भवत: उसी की स्मृति-स्वरूप श्राद्ध-पक्ष में संझ्या नाम होने के कारण प्रति दिन संध्या को संझ्याएं मांडकर उसकी स्मृति तरोताजा रखी जाती है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।